

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -22 अंक -4

मई -II-2020



(पाक्षिक)

माउण्ट आबू

Rs. 8.50

मोहाली में दित्य, अलौकिक व भव्य समारोह का आयोजन

- मानवीय मूल्यों की रक्षा हेतु 5 ब्रह्माकुमारियों ने किया प्रभु समर्पण राजयोगिनी दादी डॉ. रतन मोहिनी ने दिये वरदान
- हरियाणा विधान सभा के स्पीकर व पंजाब के उद्योग मंत्री ने दी शुभ कामनाएं

मोहाली। ब्रह्माकुमारीज सुख शान्ति भवन फेज 7 में एक भव्य, दित्य व अलौकिक समारोह में 5 कन्याओं ने अपना जीवन प्रभु-समर्पण किया। इस अवसर पर माउण्ट आबू से ब्रह्माकुमारी संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी डॉ. रतनमोहिनी विशेष रूप से उपस्थित रहीं। सभी समर्पित हुई कन्याओं के माता-पिता व सम्बन्धी समारोह में उपस्थित रहे। सभी के अभिभावकों ने इन त्यागी, तपस्विनी, राजयोगिनी बहनों को समाज सेवा में अपना तन, मन, धन व कर्म पूर्णतः लगाने की सहर्ष सहमति दी। इस अवसर पर राजयोगिनी दादी डॉ. रतन मोहिनी ने अपने आशीर्वाचनों में इन



कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी तथा साथ मंचासीन हैं ब्र.कु. अमीरचंद, सुन्दर श्याम अरोड़ा, पंजाब उद्योग मंत्री, स्पीकर ज्ञान चंद गुप्ता।

कन्याओं को देवी स्वरूपा, श्रेष्ठ चरित्रवान, साहसी व उत्साही बताया और उन्हें निःस्वार्थ सेवा द्वारा सर्व को दुआएं प्राप्त करने का वरदान दिया। कन्याओं ने अपना वर परमात्मा शिव को मानते हुए शिवलिंग पर पुष्प माला अर्पित की। ब्रह्माकुमारीज के पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू व कश्मीर, उत्तराखण्ड तथा चंडीगढ़ के निर्देशक राजयोगी ब्र.कु. अमीर चंद ने कहा कि आज मान्यताओं और विश्वास तथा

वाणी और कर्मों में अंतर आ गया है। आध्यात्मिकता सबके जीवन में समानता लाना सिखाती है। उन्होंने आगे कहा कि बाहर की गंदगी को दूर करने के साथ-साथ अपने अंदर की गंदगी अर्थात् बुराईयों को खत्म करो। ब्रह्माकुमारीज कोई धर्म नहीं है बल्कि अपनी पुरातन आदि सनातन देवी देवता धर्म की संस्कृति है। और उससे पोषित करने के लिए आध्यात्मिकता ही एकमात्र सक्षम हथियार बताया। हरियाणा विधान सभा

के स्पीकर ज्ञान चंद गुप्ता व पंजाब के उद्योग मंत्री सुन्दर श्याम अरोड़ा ने भी अपनी मंगल कामनाएं दी। नगर के अनेक गणमान्य व्यक्तियों व संस्थाओं ने इस अवसर पर राजयोगिनी दादी डॉ. रतन मोहिनी को गुलदस्ते, शॉल अभिनन्दन पत्र व मोमेन्टो आदि भेंट कर सम्मानित किया। जिनमें ज्ञान चंद गुप्ता, सुन्दर श्याम अरोड़ा, उद्योग मंत्री पंजाब, अमरजीत सिंह संदोआ, विधायक रोपड़, पूर्व मंत्री जगमोहन सिंह कंग, बीबी

- पांच कन्याओं ने किया ईश्वरीय सेवा में अपना आजीवन समर्पण
- समारोह में विधानसभा के स्पीकर सहित शहर के संस्थान के गणमान्य प्रतिनिधि व नागरिक उपस्थित रहे
- समारोह के दौरान रंगारंग संस्कृति कार्यक्रम का अलौकिक व दित्य आयोजन
- इस अलौकिक समर्पण ने सबके दिलों को छू लिया

परमजीत कौर लंदान, मोहाली इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के प्रधान योगेश सागर, गैरी आर्ट मोहाली की प्रबन्ध निर्देशिका गगनदीप कौर गैरी, रोटरी क्लब के प्रधान के.के. सेठ, रोपड़ के.ए. रिजाट के मालिक कमलशील, पंजाब सत्कर्ता ब्यूरो के डिप्टी कलेक्टर ए.के.सैनी आदि शामिल थे। क्षेत्रीय निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेमलता ने सभी का स्वागत किया।

32 महिलाओं को किया सम्मानित



कोटा-राजस्थान। ब्रह्माकुमारीज के द्वारा शक्तिसरोवर के प्रांगन में महिला दिवस का कार्यक्रम बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया गया। जिसके तहत 32 महिलाओं, जिसमें समाज सेवी से लेकर अन्य धर्मों एवं वर्गों की महिलाओं का सम्मान किया गया। इन महिलाओं के सम्मान में ब्र.कु. ज्योति ने नारी की वस्तुतः स्थिति का वर्णन करते हुए उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। आशा महेश्वरी, आल इंडिया महेश्वरी समाज की अध्यक्षा ने कहा कि सशक्त महिला

सुसभ्य समाज का निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। और ये अध्यात्म को अपने जीवन में उतारने से ही सम्भव हो सकता है। तर्नुन नाज मुस्लिम समाज, आल इंडिया रेडियो और ओनर ऑफ सुपर मार्केट ने बताया कि महिला हर वक्त, हर पल बहुत महत्वपूर्ण होती है, महिला ही पूरे समाज को पूरे परिवार को आबाद करती है। आज तक बेटियों ने जो दर्द माँ-बाप का, परिवार का समझा है विश्व में आज तक किसी ने भी नहीं समझा। सुशीला जोशी ने कहा कि साहस और शौर्य से भरी है नारी, आकाश विराटता को समेटे हुए है नारी, नारी सौम्या है, माधुर्य है, शील बनती है, कलावती है नारी। क्षेत्रीय निर्देशिका ब्र.कु. उर्मिला ने कहा कि हर एक महिला संघर्ष करके ही आज यहाँ तक पहुँची है, क्योंकि भारत देश जिसे माँ की उपमा दी गयी है उसे भारत माता कहकर पुकारा जाता है। वो कोई एक की बात नहीं है, हम सभी नारियाँ ही वो माँ हैं जो पूरे विश्व का कल्याण कर भारत माँ कहलाती हैं। कार्यक्रम में शहर के अन्य विभिन्न संस्थान की प्रतिष्ठित महिलायें भी शामिल रहीं।

पुलिस एवं मेडिकल विभाग को किया सम्मानित



सादुलपुर-राज.। लॉकडाउन के दौरान पुलिसकर्मी एवं डॉक्टरों के मनोबल को बढ़ाने व सम्मान हेतु ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र की ओर से ब्र.कु. शोभा ने थाना अधिकारी विष्णुदत्त विश्वाँई व स्टाफ और रोहिला नर्सिंग होम, जैन अस्पताल, सोनी नर्सिंग होम, राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, राजकीय आयुर्वेदिक धनवंतरी औषधालय में 250 कोरोना योद्धाओं को ईश्वरीय सौगात, प्रसाद, ईश्वरीय साहित्य, मास्क व टॉवल आदि वितरित किए।

जिस देश में महिला सम्मानित-वही देश सुरक्षित

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं के लिए विशेष कार्यक्रम



नवसारी-गुज.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सेवाकेंद्र द्वारा 'महिला सशक्तिकरण द्वारा सामाजिक परिवर्तन' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ब्र.कु. भानु ने सभी का स्वागत किया और ब्रह्माकुमारीज विद्यालय का संक्षिप्त परिचय कराते हुए कहा कि निराकार परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम द्वारा सन् 1937 में संस्था की स्थापना की। एक समय था जब नर-नारी दोनों का समाज में समान दर्जा था, जिसे सतयुग कहा जाता था। अभी परमात्मा आकर आत्मिक ज्ञान देकर, राजयोग द्वारा आत्मा में निहित दैवी गुणों को जागृत कराते हैं तथा नई सतयुगी स्वर्गिक दुनिया की स्थापना कराते हैं। संस्था के अनेक प्रभागों की जानकारी देते हुए उन्होंने महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए सेवारत महिला प्रभाग की सेवाओं से भी अवगत कराया। राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी ने कहा कि किसी भी राष्ट्र की महानता उस राष्ट्र के लोगों के चरित्र पर आधारित है। चरित्रवान समाज निर्माण

करने में नारी का बहुमूल्य योगदान है। जिस देश में नारी का सम्मान है, वही देश सुरक्षित है। कार्यक्रम के मध्य में गीता दीदी ने राजयोग मेडिटेशन के विषय को स्पष्ट कर प्रैक्टिकल मेडिटेशन कराकर गहन शांति की अनुभूति कराई। माधवी कर्वे, सोशल वर्कर ने कहा कि महिलाओं को घर चलाने की निपुणता हासिल है। ये परिवार को एकसूत्र में बांधे रखने की कला को बखूबी निभाती है। ऋषिदा ठाकोर, तपस्या नारी सेवा संस्थान की प्रमुख ने कहा कि जैसे खाना-पीना जरूरी है वैसे ही ईश्वरीय ज्ञान भी जीवन में जरूरी है। ईश्वर हमें जो संकेत देते हैं उस पर हमें चलना चाहिए। अपना समय अच्छे कार्य में लगाना चाहिए। जसवंती पटेल, प्रगति महिला मंडल की प्रमुख ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में अतिथि के रूप में आशा शाह सोशल वर्कर, प्रिन्सीपल तथा अन्य सोशल वर्कर जैसे- मीना भास्कर पटेल, लक्ष्मी पटेल, नर्मदा पटेल, अरुणा पटेल, एमी पटेल सहित शहर की प्रतिष्ठित महिलायें उपस्थित रहीं।

2

मई - II - 2020

ओमशान्ति मीडिया

‘कोरोना’ अपन को सही करो ना...!!!

भागदौड़ भरी ज़िन्दगी में मनुष्य दौड़ता ही जा रहा है, बस दौड़ता ही जा रहा है। कोई अपने लिए तो कोई अपनों के लिए। **कई इसी सोच से अपनी गाड़ी को तेज़ तरार दौड़ाता** एक बड़ी अच्छी कार ले लूँ, अच्छा-सा मकान ले लूँ, अच्छी नौकरी तलाश ली जाए, तो कोई घर परिवार को चलाने का जुगाड़ हो जाये, बस...। इसी में ही दौड़ रहा है। अचानक फिर लॉकडाउन हो गया। सब अपने-अपने घर में कैद हो गये। ऐसे वक्त में कईयों को अपने घर में, अपनों के साथ रहने में भी बोरियत-सी रहने लगी। पर करें भी तो क्या? बाहर जायेंगे तो अज्ञात शत्रु कोरोना का डर, न वो दिखाई देता है और ना सुनाई पड़ता है। बस किसी को भी टच करें या छू लें तो अपने जाल में फंसा लेता है और नाक पकड़ कर गला घोट देता है। ऐसे में बस... उपाय दिखाया है तो सिर्फ और सिर्फ स्वयं को दूसरों से दूरी बनाए रखना का। पर वह भी तो कठिन-सा लगता है। मजबूरी से ही सही जैसे-तैसे पालन तो करना ही पड़ेगा अन्यथा उसकी गिरफ्त से बचना मुश्किल। ऐसे वक्त पर दो तरह की श्रेणी के लोग दिखाई पड़ते हैं। एक वर्ग है जो अचानक आई चुनौतियों ने मन का चैन चुरा लिया। दूसरा वर्ग है जो हुआ बहुत अच्छा हुआ। इस सकारात्मक विचार को लिए हुए हैं।

पहले वर्ग के लोगों की तादाद बहुत ज्यादा है जो सोचते हैं कि कैसे कटेंगे घर में दिन? कैसे रह पायेंगे 21 दिन तक? बाहर की ना हवा, ना दोस्त, ना अपने साथी, ना ही अपना दफ्तर ये सभी वैरायटी से हम वंचित हो गए। बड़ा मुश्किल लगता है इस घर की गिरफ्त में रहना। पर जायें तो जायें कहाँ! बाहर जायें तो फिर वही डर। क्योंकि वो अपने माया जाल में फंसा लेगा, बस...। अपना ही घर जेल जैसा प्रतीत होने लगा। होगा भी क्यों ना! क्योंकि इस तरह का तो कभी मन ने सोचा ही नहीं था, अचानक ही हो गया। और कोई चारा रहा नहीं, वहीं पर रहने को विवश हो गए।

दूसरा वर्ग- जो हुआ सो अच्छा हुआ। इसी सकारात्मक सोच वालों ने उन शिकायतों को दूर किया जो हमेशा घर से शिकायत बनी रहती थी कि आपके पास तो घर के लिए टाइम ही कहाँ है। उन्होंने इस तरह समझा कि अब ये मौका आया है अपने और अपनों के साथ रहने का, कुछ उनका भी सुन लिया जाये! इस लॉकडाउन का फायदा ले लिया जाये।

कईयों ने इस चुनौति को अवसर समझा। और घर में रहकर भी एक नये ढंग से, एक नई सोच को क्रियेट किया। और मिले हुए इस सु-अवसर को नये अंदाज से अपने आपको देखा तो पाया कि ज़िन्दगी की रफ्तार में खुद से ही दूर हो गये। ज़िन्दगी जा कहाँ रही है? आखिर में ज़िन्दगी को कहाँ पहुँचाना चाहता हूँ? देखा, तो जो भी जी रहा हूँ उसपे कितने सारे बोझ लादकर दौड़ रहा हूँ। जिसे सोचने पर पता चला कि ये जो लदे हुए बोझ हैं इनका ज़िन्दगी से कोई लेना देना ही नहीं है।

देखा तो पता चला कि सुबह उठने से वापसी घर आने तक मन के अन्दर इतने सारे बोझ लद जाते हैं जिससे थकान, तनाव व घुटन-सी फील होती है। और देखा कि मन में कईयों के प्रति ईर्ष्या, नफरत, कटुता, प्रतिस्पर्धा के काले धब्बे लगे हुए हैं। जो ज़िन्दगी को बोझिल करते हैं। सम्बन्धों में ऐसे जाले लगे हुए हैं जो सम्बन्धों की मिठास से वंचित कर रहे हैं। शांति का दीया तो जैसे बुझ ही गया है। सच्चे प्रेम की जगह को शुगर कॉटेड प्रेम ने ले लिया है। जहाँ अन्ततः दुख ही हाथ लगता है।

इन सबको ठीक करने के लिए मन में सुन्दर विचार आया कि इन सब काले धब्बों और जालों को हटा लिया जाये तो! तो सोचिए कैसा होगा जीवन! फिर विचार की परत पर परत खुलने लगी। और विचार आया कि अगर हटाया जाये तो कैसे? सोचा, बात वहीं आकर रूक गई अरे! मन से सुख, मन से दुख, बस बात पकड़ में आ गई। जब मन मेरा है इस विचार ने तो जैसे और नये राज खोल दिए। मेरा मन पर मेरा ही नहीं। मेरे मन पर अधिकार किसका है? जो सुकून को छिन रहा है। देखा व सोचा किस-किस ने उस पर कब्जा किया है। मेरा है तो मैं जैसे चाहूँ उसे चला सकता हूँ लेकिन इस पर प्रभुत्व किसका हो गया है? ये तो ऐसे हुआ जैसे कि अपनी प्रॉपर्टी पर किसी दूसरे ने अपना मकान बनाकर अपनी धाक जमा ली हो! उसे कौन यूज़ कर रहा है ज़रा देख लिया जाये..। बस यूँहि विचार अन्दर आते रहे तो फिर नया विचार आया कि मन की शांति। फिर नया संकल्प उठा कि मन को अशांत कौन कर रहा है? शांति कौन छिन रहा है ज़रा देख लिया जाये। भीतर कुतरने पर पता चला कि माइंड इज़ पॉवर, मन की शक्ति, मन की ऊर्जा, ये तो मेरी शक्ति हुई ना! मन की शांति कौन भंग कर रहा है, मन में हलचल किस वजह से हो रही है, ये देखा तो बड़ी लिस्ट मन रूपी आँखों के सामने आ गई। हमारे ये सारे मन के सुख, शांति, चैन व सुकून कौन छिन रहा है ये समझ में आया। हमने उन विचारों की लिस्ट को तीन कैटेगरी में अलग-अलग छांटो तो पता चला कि वो ये है पहला देह, दूसरा सम्बन्ध, तीसरा धन।

पहला देह - देह मेरी है तो मेरा उस पर अधिकार है। तो मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि मैं शक्तिशाली आत्मा हूँ, बस मुझे इस शक्ति से देह को सम्भालना है, ना कि देह के पिछे इस शक्ति को व्यर्थ खर्च करना है।

दूसरा है - सम्बन्ध। सम्बन्धों में भी देखा कि कई ऐसी कटुता की दिवारें खड़ी नज़र आईं। जोकि मन को भारी करती हैं। मैंने उसको सोचा, समझा और सही मायने में सम्बन्ध क्या है उसको जीने का नज़रिया बनाया।

तीसरा धन - हम जिसे सुख का साधन समझते हैं वही हमारे दुख का कारण बना। बेशक धन जीवन जीने के लिए एक ज़रूरी साधन है पर इतना तवजू उसके पीछे दिया जिससे जीवन का संतुलन ही बिगड़ गया। ना शांति मिली, ना सुख।

अब उसे जीऊंगा और जीने दूँगा। नये संकल्प के साथ, नई शक्तियों के साथ फिर से वही ज़िन्दगी, पर जीने की सोच नई होगी, अंदाज नया होगा।

इस तरह हमने मन को सकारात्मक दिशा देकर लॉकडाउन में मिले समय से जीवन जीने के लहजे को ही परिवर्तित कर दिया। मेरी तो आँखें ही खुल गईं। परमात्मा से हमें जीवन जीने के लिए, जीवन में सुकून पाने के लिए इतना सारी कुदरती बखशीश प्राप्त है। तो आप भी ऐसी चुनौतियों को सु-अवसर में बदल कर सुकून को जीवन में लायें। तो आप ऐसा करेंगे ना! घबरायेंगे तो नहीं!



- व. कु. गंगाधर

दादी हृदयमोहिनी,
मुख्य प्रशासिका

बाबा ने कहा है बच्चे लाइट हाउस बनो। तो लाइट हाउस का काम क्या होता है? चारों ओर रोशनी देना। इस समय दुनिया की सभी आत्माओं की यही इच्छा है कि सदा सुखी रहें, सदा शांत रहें। साधारण अशान्ति से शान्ति तो सब लोग समझते हैं लेकिन हम लोगों की स्थिति ऐसी होनी चाहिए जो मन नेगेटिव या व्यर्थ संकल्पों में भी नहीं जाये। इससे किनारा होगा तो हमारे बेस्ट, शुभ संकल्प होंगे। फिर उन समर्थ संकल्पों के वायब्रेशन स्वतः जाते हैं। बाबा जब आते

कर्म में मालिकपन की स्मृति द्वारा ही विदेही स्थिति का अनुभव सहज कर सकेंगे

अगर खुद में ही नहीं होगा तो दूसरों को कैसे देगा? और लाइट हाउस की लाइट तो पावरफुल होती है। तो इतनी शक्तियाँ जमा करके, लाइट हाउस बनके वायुमण्डल को परिवर्तन करना है।

हैं तो वायब्रेशन अच्छे लगते हैं, क्यों? क्योंकि वह सागर है। ज्ञान का, सब शक्तियों का सागर है, उसका वायुमण्डल चारों ओर फैल जाता है। तो ऐसे हम सबको भी लाइट हाउस होकर वायुमण्डल में फैलाना है। वह हद की रोशनी फैलाने वाला लाइट हाउस तो कॉमन है। लेकिन रूहानी लाइट हाउस वही बन सकता है जिसमें सब शक्तियों का स्टॉक हो। अगर खुद में ही नहीं होगा तो दूसरों को कैसे देगा? और लाइट हाउस की लाइट तो पावरफुल होती है। तो इतनी शक्तियाँ जमा करके, लाइट हाउस बनके वायुमण्डल को

परिवर्तन करना है। विश्व परिवर्तन की बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। तो बाबा ने यह जो अवश्य निभानी चाहिए। कई समझते हैं हम तो बहुत बिजी रहते हैं इसलिए पावरफुल योग नहीं हो सकता है। विदेही बनना, अशरीरी बनना या कर्मातीत बनना - यह तो बहुत ऊँची मंजिल है। इसके लिए अगर हम अभी से तैयारी करें तो लास्ट में हमको यह तैयारी मदद देगी। विदेही माना ये नहीं कि देह से एकदम न्यारा हो जायें फिर तो शरीर छूट जायेगा। विदेही का अर्थ ही है कि कोई भी देह की

कर्मैन्द्रियाँ चाहे सुनने वाली, चाहे देखने वाली, चाहे सोचने वाली यह कोई भी मुख्य कर्मैन्द्रियाँ हमको देह भान में नहीं लाये अर्थात् देह की कोई भी कर्मैन्द्रियाँ हमको अपनी तरफ आकर्षित नहीं करे। वश में नहीं है तो कोई न कोई विशेष कर्मैन्द्रियाँ जो होती हैं वह खींचती हैं, तो हर एक को अपनी चेकिंग करनी चाहिए कि बहुत करके कौन-सी कर्मैन्द्रिय मेरे कंट्रोल में नहीं हैं। जो कंट्रोल में नहीं है वही अन्त में धोखा देगी। तो विदेही तब बन सकेंगे जब यह सब कर्मैन्द्रियाँ कंट्रोल में हों।

ज्ञानी तू आत्मा का पहला पहला गुण है - सहनशीलता

बाबा ने कहा बच्चे दुःख-सुख, स्तुति-निंदा, मान-अपमान सबमें समान रहने की, एकरस स्थिति में रहने की, सहनशील होने की शक्ति चाहिए।

बाबा हम बच्चों को यह बहुत बड़ा लेसन देते हैं कि हे बच्चे! इस ज्ञान की मंजिल पर चलेंगे तो सहन करने की शक्ति धारण करनी पड़ेगी। सहनशील बनने की थोड़ी तकलीफ लेनी पड़ेगी। यह सहनशीलता का गुण बहुत बड़ी शक्ति है, यह सर्व गुणों में महान गुण है। यह बाबा का बोल सुन सब प्रैक्टिकल चार्ट देखें कि मेरे में सहनशीलता का गुण व शक्ति है? बाबा ने कहा बच्चे दुःख-सुख, स्तुति-निंदा, मान-अपमान सबमें समान रहने की, एकरस स्थिति में रहने की, सहनशील होने की शक्ति चाहिए। तो यह शक्ति चाहिए या मुझ आत्मा का अथवा इस ज्ञान का पहला-पहला गुण ही यह है। ज्ञानी तू आत्मा का गुण है - समान रहना। अगर ज्ञानी तू आत्मा में यह गुण नहीं तो वह प्रिय नहीं। जब हम अपने को

ज्ञानी तू आत्मा कहते माना हमारे अन्दर ड्रामा की सारी नॉलेज है। हर आत्मा के सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो की स्टेजस की भी नॉलेज है। जब नॉलेज है तो नॉलेज की शक्ति के आधार पर समान रहने की शक्ति स्वतः ही आ जाती है। जैसे बाल से युवा, युवा से वृद्ध होते तो कभी यह नहीं कहते कि ओ नेचर! तूने बाल से युवा व युवा से

बूढ़ा क्यों बनाया? परन्तु जानते हैं यह प्रकृति का नियम है। चार ऋतुएँ होना यह भी प्रकृति का नियम है। जब हम जानते हैं कि यह नियम है तो हम क्यों कहें ओ प्रकृति तुम हमें ठण्डी में व गर्मी में दुःख क्यों देती! हम जानते हैं कि ये नेचर का गुण है। सर्दी के

समय सर्दी, गर्मी के समय गर्मी होनी ही है। हमारे पास उससे बचने के साधन हैं तो उसे यूज़ करें। हम जान गये कि अभी की प्रकृति है ही तमोप्रधान। सतयुग में प्रकृति सतोप्रधान है इसलिए सुखदाई है। फिर जब कहते क्या करें यह पारिवारिक परिस्थितियाँ आती हैं। वह तो आयेंगी ही। मैं उससे दुःखी क्यों हूँ! जैसे प्रकृति का दुःख, सुख सहन करते, वैसे

यह परिवार का भी तो हिसाब-किताब है। मैं उसमें क्यों लडूँ! हमें उसमें अपनी स्थिति अप-डाउन नहीं करनी है। कभी-कभी सोचते मुझे तो सबसे मान मिलना चाहिए। ये मुझे मान नहीं देता इसलिए गुस्सा आता। लेकिन जब प्रकृति दुःख देती है तो गुस्सा क्यों

नहीं आता। जब मेरा कोई अपमान करता तो मैं रंज होती लेकिन मैं सोचूँ कि मैंने उसे कितना मान दिया है। एक है देना, एक है लेना। जब अपमान पर गुस्सा आता माना मैं मान की भूखी, प्यासी हूँ। मान की मांग है। मैं दाता बनूँ या लेवता बनूँ? मुझे मान देना है या लेना है? मैं वरदाता हूँ या आत्माओं से वर लेने वाली हूँ? मान मांगना अर्थात् आत्माओं से वर मांगना। बाबा कहता मांगने से मरना भला...मैं दाता की बच्ची दाता हूँ तो लेवता क्यों बनते! यह सवाल हरेक अपने से पूछे। हरेक अपने से पूछे - पहले मेरी स्तुति मेरे 10 मंत्री (कर्मैन्द्रियाँ) करते? जो मुझ आत्मा का संस्कार है वह संस्कार मेरी स्तुति करता? जब मेरा संस्कार मेरी स्तुति करे अर्थात् ऑर्डर में रहे तब दूसरे भी स्तुति करेंगे।

दादी प्रकाशमणि,
पूर्व मुख्य प्रशासिका

सिम्पल रहकर सैम्पल बनने के साथ तपस्वीमूर्त बनो

दादी जानकी,
पूर्व मुख्य प्रशासिका

प्यारे बाबा ने हमको अपने ही जैसा तपस्वी मूर्त बनाकर खूबसूरत बना दिया। मुरली में बाबा ने कितना बारी कहते बच्चे मेरे को याद करो। ब्रह्मा बाबा ने हम बच्चों को अपने जैसा तपस्वी मूर्त बनाया। बाबा ने कहा योग अग्नि है तभी तो योग से विकर्म विनाश होते हैं, योग ऐसा लगाओ जो रहे हुए सब विकर्म विनाश हो जाएं। योग अग्नि भी है तो योग शीतल और मीठा भी बनाता है। कभी यह ख्याल नहीं आता है कि हमारे पास यह कमी है, नहीं सब कुछ है। एक बुक लण्डन में तैयार कर रहे

हैं “मुझे मरना है तो कैसे, जीना है तो कैसे?”, यह मेरी भावना थी बहुत समय से। यह मरजीवा लाइफ है, इसमें एक मरने का और एक जीने का फोटो भी डाला है। तो हमें बाबा को एक्ज्यूट कॉपी करना है। जो भी लिखत होती है उसके ऊपर लिखते कॉपीराइट। यह जो बुक है मरने का और जीने का, इसकी भले कॉपी करो, मना नहीं है। तो

जब कमी मैं पाण्डव भवन में होती हूँ तो वह अनुभव याद आने लगता है और मेरे साथ जो विदेशी बहन-भाई होते हैं मैं उनको कहती हूँ गद्दी पर बैठ करके यह भासना ले लो।

कोई ऐसा मरने का पुरुषार्थ करता है? मैं सदा ही यह प्रैक्टिस करती हूँ। एक बारी बाबा अपने कमरे में गद्दी पर बैठा था, सामने मैं बैठी थी, बाबा बहुत अच्छा लग रहा था।

ऐसा अच्छा लग रहा था जो वहाँ से हटने को भी जी नहीं चाहता था। दीदी ने कहा बाहर बहुत

खड़े हैं। तो बाबा ने कहा बच्ची, ठहरो अभी सत्यनारायण की कथा चल रही है। उस घड़ी ऐसी भासना आई जैसे मैं सत्य नारायण स्वामी के सामने बैठी हूँ। फिर कहा यहाँ बाजू में आकर बैठो। बाजू में बिठाकर ऐसी करेन्ट आई जिसने अशरीरी बना दिया। तो जब कभी मैं पाण्डव भवन में होती हूँ तो वह अनुभव याद आने लगता है और मेरे साथ

जो विदेशी बहन-भाई होते हैं मैं उनको कहती हूँ गद्दी पर बैठ करके यह भासना ले लो। तो यह जो पुरुषार्थ है, शरीर में रहते भी अशरीरी रहना और ट्रस्टी रहना यानी सिम्पल रह करके सैम्पल रहो, दूसरी तरफ कहता है तपस्वी रहो। फिर अव्यक्त रहो क्योंकि आँखों का काम है ही नहीं, जहाँ

भी पाँव रखो तो पाँव धरती पर नहीं हैं। सेवा भले करो पर तपस्या भी करो। याद में रहना है तो कैसे रहना है! हमारा योग ऐसा हो जो और कोई बात याद न आये। सवरे की बात शाम को याद नहीं। ऐसा योगयुक्त रहना है जो कोई भी बाजू में बैठे तो खुश होके जाये।

यह टाइम बहुत अच्छा है, आपस में मिलके रहना और बाबा की यादों में रहना। जितना हम आपस में मिल करके रहते हैं तो मुस्काराते हैं। कभी-कभी कोई-कोई देशों में हम कहती एक दो को सामने ऐसे देखो और मुस्काराओ, इससे बहुत फायदा हुआ है। पहले मुस्कराना सहज है उसके लिए सब काम सहज हो जाते हैं। मैं बाबा के सामने हार्मोनियम बजाते गीत गाती थी तो बाबा खुशी में मुस्काराता था। हारमनी माना हार मानी झगड़ा टूटा, सेवा में कभी ज़िद्द और सिद्ध नहीं।

अन्धेरा दूर करती आशा की एक किरण

मौत ने तो धर दबोचा एक चीते की तरह, जिंदगी ने जब छुआ तो फासला रख कर छुआ - दुष्यंत

हर रास्ता अनजान-सा, हर सफलता नादान-सी सदियों पुरानी है मगर हर दिन नई है जिन्दगी - निदा फ़जली

जिंदगी के साथ सफलता और विफलता दोनों जुड़ी हुई हैं। ऐसे कम ही होता है कि हम जिस काम में हाथ डालें वो बिना किसी बाधा के शत-प्रतिशत पूरा हो जाए अथवा सारे ही काम पूरी तरह बिगड़ जाएं। अगर हमारे असफल होने का प्रतिशत पचास से काफी ऊपर पहुँचा हुआ है तो हमें ठण्डे दिमाग से अपनी विफलताओं के कारण, अपने अन्दर ही ढूँढ़ने पड़ेंगे। ऐसा न करने पर बार-बार की विफलता हमें कुंठित बना सकती है। कुंठा हमारे मन में उलझी हुई एक ऐसी गाँठ है जो हमारे विचारों और व्यवहार को अपने अन्दर जकड़ लेती है और हम सही और स्वतंत्र चिन्तन के काबिल ही नहीं रह पाते।

प्रेम में धोखा खाए हुए लोग प्रेमियों की मूर्खताओं पर हँसते हैं और कंजूस लोग उदारता से खर्च करने वाले लोगों को दिखावा पसन्द या पाखण्डी सिद्ध करते हैं। जिन्दगी की दौड़ में पिछड़े हुए व्यक्ति कामयाब लोगों को चापलूस और बेईमान बताते हैं। दाम्पत्य में दुःखी लोग प्रेमी पतियों को जोरू का गुलाम बताते हैं और आलसी लोग मेहनती व्यक्तियों को लालची साबित करते नहीं थकते। कुंठित लोग सब जगह अन्धकार और निराशा फैला देते हैं। न इन्हें अपनी उपलब्धियों से खुशी होती है और न इनसे दूसरों की सफलता सहन होती है। मेरे पड़ोसी को एक लाख रुपये की लॉटरी मिल गई। महाशय को पैसे की सख्त जरूरत भी थी। मैंने जाकर बधाई दी तो उदास भाव से जवाब दिया, “हमारे पास क्या बचने वाला है? आधा पैसा तो सरकार आयकर में जमा कर लेगी।” इसके बाद बीस मिनट तक श्रीमान् का भाषण सरकार की कर-नीति के खिलाफ चलता रहा।

कुंठित आदमी रोशनी में भी अन्धेरा ढूँढ़ ही लेता है। उसे खूबसूरती में भी कुरूपता ढूँढ़ लेने की विशेष महारत प्राप्त होती है। वह कमियाँ और खराबियाँ देखने के लिए पैनी नज़र रखता है। उसे किसी की भी शराफत पर भरोसा नहीं होता।

आशावादी को खुशी है कि जिंदगी कितनी मजेदार चीज़ है लेकिन निराशावादी को अफसोस है कि एक दिन मरना पड़ेगा। आशावादी को अच्छा लग रहा है कि बादल छँट गए हैं और धूप निकल आई है लेकिन निराशावादी को चिन्ता है कि आज गर्मी रहेगी। पदोन्नति हो जाने पर भी निराशावादी सोचता है कि अब जिम्मेदारियों का भार बढ़ गया है, न होने पर तो वह पक्षपात और भाई-भतीजेवाद को कोसता ही है।

फसल बुरी हुई तो उसे भय है कि परिवार का खर्चा कैसे चलेगा, अच्छी फसल हुई तो चिन्ता है कि ज़्यादा उत्पादन के कारण इस बार भाव गिर जाएँगे। सूखा होने पर अकाल की दुश्चिन्ता और बारिश हो जाने पर कीचड़ और मच्छरों की समस्या उसे चैन नहीं लेने देती। बचपन की निर्भरता से छुटकारा पाकर वह आज़ाद युवावस्था में पहुँचना चाहता है मगर जवान होने पर उसे बचपन की मस्ती खो जाने का गम है। कुल मिलाकर हताशा से कुंठित व्यक्ति प्रसन्नता और सुख का जानी दुश्मन होता है। उसे यह पता नहीं होता कि वह चाहता क्या है। वह तो यही



जाने-माने बुद्धिजीवी लोग अपनी सुविधाभोगी जिंदगी के अलावा किसी भी बात से नहीं जुड़े होते। यही कारण है कि दूर खड़े दर्शक की तरह वे सिर्फ विश्लेषण और आलोचना ही करते हैं और यह भ्रम पालते रहते हैं कि वे विचारक हैं। ठीक इसी प्रकार “सिनिक” भी न्यायाधीश की तरह इस संसार की कमियों और खराबियों की जाँच-पड़ताल करते रहते हैं लेकिन इन्हें ठीक करने में उनकी कोई रूची नहीं होती।

जानता है कि वह सन्तुष्ट नहीं है। अच्छाई उसे कहीं दिखाई नहीं पड़ती और बुराई देखने से वह कभी चूकता नहीं है।

निराशा से कुंठित व्यक्तियों को सबसे ज़्यादा खुशी तब होती है जब कोई आदमी अपने ध्येय को प्राप्त करने में विफल हो जाता है। तब वे दौड़कर उसके पास जाते हैं और कहते हैं - मैंने तो तुम्हें पहले ही कहा था कि क्यों भागदौड़ करते हो भैया, यह दुनिया ही नालायकों से भरी पड़ी है। यहाँ मक्कार और बदमाश ही कामयाब होते हैं। मेरे-तुम्हारे जैसे लोगों के लिए यहाँ जगह ही नहीं है।

ऐसे निराशावादी मानव - द्वेषियों से लोग नफरत करते हैं। उदासी और दुःख फैलाने वालों से सभी दूर भागते हैं क्योंकि हर आदमी की जिंदगी में पहले से ही काफी पेशानियाँ

मौजूद हैं। लोगों को उत्साहपूर्ण और आशावादी व्यक्ति ही अच्छा लगता है। हर कोई प्रोत्साहन चाहता है। हर एक चाहता है कि कोई उसकी हिम्मत बढ़ाए, उसका हौसला-अफजाई करे। इसलिए अनिष्ट के सन्देशवाहक न बनें। हो सके तो अपने साथियों को निराशा और गमों से राहत दिलाने के लिए उनकी हिम्मत बढ़ाएँ।

आशा का संचार हो जाने पर रोगी भी जल्दी ठीक होने लगता है। डॉक्टरों के मतानुसार जिन रोगियों में स्वस्थ होने की इच्छाशक्ति समाप्त हो गई है उन्हें सिर्फ दवा के बल पर ठीक नहीं किया जा सकता। दूसरों में उत्साह और आशा जागृत करने से आप पाएँगे कि अनजाने में ही आपकी हताशाएँ भी गायब हो गई हैं।

जो आदमी जितनी आलोचना करता है, वह रचनात्मक कार्यों से उतना ही दूर रहता है। किसी व्यक्ति से या विचारधारा से जब तक आपका सरोकार नहीं होता तब तक उसे ठीक करने या सुधारने का प्रयास आप नहीं करते। सरोकार न होने पर आप उसके बारे में सिर्फ आलोचनात्मक टिप्पणियाँ ही कर सकते हैं।

मन को निराशा के गहरे अन्धकूप से बाहर निकालकर ताज़ा रोशनी और हवा में लाने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए - पुरानी असफलताओं और पछतावों से मत चिपके रहिए। आपका मन अतीत की दुःखदाई स्मृतियों का म्यूजियम नहीं है। याद रखिए कि संयोगवश कई बार योजनाबद्ध और कुशलतापूर्वक किए काम भी बिगड़ जाते हैं। आप भी कई कार्यों में असफल हो गए होंगे। सिकन्दर, नेपोलियन, लिंकन और गाँधी जी भी कई कार्यों में विफल रहे थे। हर कार्यकर्ता विफलता को मानकर चलता है। हाँ, जो आदमी कुछ करेगा ही नहीं वह तो असफल भी कैसे होगा?

अपनी तुलना दूसरों से मत करते रहिए। ऐसा करना निराशा को ही जन्म देता है क्योंकि हम सम्पूर्ण तुलना न करके एकपक्षीय तुलना करते हैं। राघव व्यापार में आपसे आगे बढ़ गया मगर उसका दाम्पत्य दुःखी है और बच्चे बिगड़ गए हैं क्योंकि वह चौबीस घण्टे ही व्यस्त रहा है। आप सिर्फ व्यापारिक स्थिति की तुलना ही कर लेते हैं और स्वयं को पिछड़ा महसूस करते हैं। अपने पारिवारिक सुख की भी तो उससे तुलना कीजिए।



हाथरस-उ.प्र.। त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए जिला राज्यपाल अशोक कपूर, उनकी धर्मपत्नी किरण कपूर, अधिवक्ता अतुल आंधी बाल, ब.कु. भावना, ब.कु. सीमा, ब.कु. सीता तथा अन्य।



दिल्ली-इंद्रपुरी। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में कृषि विज्ञान मेले का उद्घाटन करने के पश्चात् केन्द्रीय कृषि एवं किसान राज्य मंत्री कैलाश चौधरी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. बाला तथा ब.कु. गायत्री।



दिल्ली हरिनगर। मनोवर्धन प्रोजेक्ट का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब.कु. शुक्ला दीदी, वाइस चेयरपर्सन एस.एस.डब्ल्यू. जीवन प्रबन्धन विशेषज्ञा ब.कु. शिवानी तथा अजय कश्यप, डी.जी. होम गार्ड्स।



फरिदाबाद-हरि.(से.21डी)। शिव जयंती कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए हिन्दुस्तान समाचार के वरिष्ठ पत्रकार एन.के. सिंह, पीस न्यूज हेड ब.कु. कोमल, ब.कु. सुशांत, ब.कु. हरीश बहन, ब.कु. सुनीता, ब.कु. प्रीति तथा अन्य।



शाहकोट-पंजाब। शिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में शिवध्वजारोहण करते हुए डी.एस.पी. प्यारा सिंह, एस.एच.ओ. सतविंदर सिंह कंबोज तथा ब.कु. राज दीदी। साथ हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. तुलसी, ब.कु. शक्ति बहन तथा अन्य।



किशनगढ़-रेनवाल(राज.)। शिवरात्रि कार्यक्रम में ध्वजारोहण करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में नगरपालिका अध्यक्ष सुमन कुमावत, व्यापार महासंघ अध्यक्ष अशोक असावा, पूर्व नगरपालिका उपाध्यक्ष सीताराम बासनी, ब.कु. पूनम, ब.कु. सुमित्रा तथा अन्य।



नजीबाबाद-उ.प्र.। महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब.कु. शालू, ब.कु. दीपिका तथा एस.डी.एम.।



सोनीपत-हरियाणा(से.15)। होली के पावन पर्व पर डॉ. अम्बेडकर नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी में फूलों से होली मनाने के पश्चात् समूह चित्र में सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. प्रमोद बहन, ब.कु. सुनीता तथा यूनिवर्सिटी स्टाफ एंड स्टूडेंट्स।

साम्प्रदायिकता और जातीयता का रंगीन चश्मा उतारकर देखें तो ही धर्म का शुद्ध रूप समझ में आता है। अन्यथा अपनी सम्प्रदाय का रंग-रोगन, नाम-लेबल ही सारी प्रमुखता ले लेता है, धर्म का सार महत्वहीन हो जाता है। धर्म की कसौटी पर किसी व्यक्ति को कसकर देखना हो तो यह नहीं देखेंगे कि वह किस सम्प्रदाय में दीक्षित है अथवा किस-दार्शनिक मान्यता को मानता है, अथवा किन रूढ़ियों को पालता है। वरन् यह देखेंगे कि उसका आचरण कैसा है? जीवन-व्यवहार कैसा है? कुशल है या नहीं? पावन है या नहीं? आत्म-मंगलकारी और लोक मंगलकारी है या नहीं? यदि है तो धर्मवान ही है। जितना-जितना है, उतना-उतना धर्मवान है।

वर्तमान में धरती पर धर्म के नाम पर मार-काट मची हुई है। धर्म के नाम पर वैमनस्य फैल रहा है। धर्म को राजनीति का मोहरा बनाया गया है, जिसके भुलावे में आकर जनता को धोखा दिया जा रहा है। किसी ने ठीक ही कहा है: **धर्म के नाम पर राजनीति कितनी खरी है, जितनी चाहो रोटियाँ सेको, यह भट्ठी हमेशा-हमेशा आग से भरी है।** जबकि धर्म के आधारभूत सिद्धांतों को नज़रअंदाज़ कर उसके आवरण को, उसके उपासना के मार्ग को ही महत्वपूर्ण बना दिया गया है।

आज हर कोई अपनी जाति, सम्प्रदाय, पंथ बताकर कहता है कि मैं ये हूँ, मैं वो हूँ। किंतु कोई यह नहीं कहता कि “मैं इंसान हूँ” और इंसानियत मेरा धर्म है।

क्या हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन होना यही धर्म है? क्या ऊँच-नीच, वर्णभेद को मानना धर्म है? नहीं। धर्म तो एक आदर्श जीवन शैली है, सुख से रहने की पावन पद्धति है, शान्ति प्राप्त करने की विमल विद्या है, सर्वजन कल्याणी आचार संहिता है, जो सबके लिए है।

धर्म के संबंध में श्री सत्यनारायण गोयनका के विचार हैं, “धर्म को जाति, वर्ण, वर्ग, समुदाय, देश, राष्ट्र की सीमाओं में भी नहीं बाँधा जा सकता। मानव, समाज के किसी भी वर्ग में धर्मवान व्यक्ति हो सकता है। धर्म पर किसी वर्ग विशेष का एकाधिकार नहीं हुआ करता। धर्म हमें नेक आदमी बनना सिखाता है। वह अपने सम्प्रदाय की ही नहीं प्रत्युत सारे मानव समाज की शोभा है। जो नेक आदमी ही नहीं है, वह नेक हिंदू व मुसलमान, नेक बौद्ध व जैन, नेक भारतीय व



बर्मी, नेक ब्राह्मण व क्षत्रिय कैसे हो सकता है? और जो नेक आदमी हो गया, वह सही मायने में धर्मवान हो गया। उसे कोई किसी नाम से पुकारे, क्या फर्क पड़ता है!

गुलाब, गुलाब ही रहेगा, नाम बदल लेने से उसकी

कि उसका आचरण कैसा है? जीवन-व्यवहार कैसा है? कुशल हैं या नहीं? पावन हैं या नहीं? आत्म-मंगलकारी और लोक मंगलकारी हैं या नहीं? यदि है तो धर्मवान ही हैं। जितना-जितना है, उतना-उतना धर्मवान है। यदि नहीं है तो उस

महक में कोई अंतर नहीं आया। जिस बगिया में खिलेगा न केवल उसे, बल्कि आस-पास के सारे वायुमंडल को अपनी सौरभ से सुरक्षित करेगा। अतः मुख्य बात है धर्मवान बनने की, नेक इंसान बनने की। नाम चाहे जो रहे, बगिया चाहे जिस समुदाय की हो, उस पर चाहे जिसका बोर्ड लगा हो; फूल खिलने चाहिए, सौरभ बिखरना चाहिए।”

साम्प्रदायिकता और जातीयता का रंगीन चश्मा उतारकर देखें तो ही धर्म का शुद्ध रूप समझ में आता है। अन्यथा अपनी सम्प्रदाय का रंग-रोगन, नाम-लेबल ही सारी प्रमुखता ले लेता है, धर्म का सार महत्वहीन हो जाता है। धर्म की कसौटी पर किसी व्यक्ति को कसकर देखना हो तो यह नहीं देखेंगे कि वह किस सम्प्रदाय में दीक्षित है अथवा किस-दार्शनिक मान्यता को मानता है अथवा किन रूढ़ियों को पालता है। वरन् यह देखेंगे

व्यक्ति का धर्म से कोई संबंध नहीं है।

धर्म के अर्थ के बारे में एक विद्वान ने लिखा है, “स्वभाव, प्रकृति अथवा वह जिससे हमारा गुण, हमारी अस्मिता मुखरित हो, जिस गुण के त्याग से हमारी पहचान समाप्त हो जाए, वही हमारा धर्म है। इस धार्मिकता के अभाव में मनुष्य पशुतुल्य कहा गया है - धर्मण हीना: पशुभिः समानः। मानव धर्म उन लक्षणों का निर्वाह है जिनके द्वारा मानव अपने को मानव कह सके और मानव होने का दावा पूरा कर सके। यही कारण है कि आज से अढ़ाई हजार वर्ष पूर्व बुद्ध ने धर्म की शरण में जाने का उपदेश दिया था - धम्मंशरणं गच्छामि।

शब्दकोश के अनुसार, धर्म का तात्पर्य जन्मजात स्वाभाविक गुण से होता है जैसे अग्नि का धर्म दहकना है, जल का धर्म शीतलता है आदि। यदि अग्नि दहकना त्याग दे तो क्या वह अग्नि रह जाएगी! जल यदि शीतलता का त्याग कर दे तो क्या जल रह जाएगा! इसी प्रकार मनुष्यों का भी कोई जन्मजात गुण होना चाहिए और वह धर्म है - मानवता या इंसानियत। इसीलिए कहा जाता है : सारे धर्मों का यह खुलासा पैगाम है।

धर्म मजहब असल में इंसानियत का नाम है। इंसानियत की संधि विच्छेद करें तो इन + शान + यत। इसको हम इस तरह से भी देख सकते हैं कि हर इंसान को उन सात चीजों की आवश्यकता है जिनको पाने के लिए ही वो इधर-उधर, मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा आदि में दौड़ता रहता है। ये सत्व चीजें हैं- ज्ञान, सुख, शान्ति, आनंद, प्रेम, पवित्रता और शक्ति। हर मनुष्य को इसकी आवश्यकता है। इसीलिए तो ये प्राप्त करने के लिए इच्छा रखता है। इन सातों चीजों को एक शब्द में कहें तो “आत्मा” कहेंगे। इसे कई नाम दिए गए हैं जैसे रूह, प्राण, आत्म आदि-आदि। आप ही बताइये कि कौन से मजहब में इन सातों चीजों का ना होना चाहते हैं, सभी तो यही चाहते हैं ना कि मेरे जीवन में इन सातों गुणों की प्रधानता हो। उसमें बाहरी कोई भी दिवारें चाहे धर्म की, जाति की, पाती की या देश की नहीं हो सकती। तो यही धर्म का मर्म जिसे हम समझ जायें तो सुखी रह सकते हैं।



कूच बेहर-प.बंगाल। होली मिलन समारोह में उपस्थित हैं उद्योगपति नरेश जी, डॉ. अनिबन, डॉ. जॉय, प.बंगाल इरीगेशन ऑफिसर अभिजीत जी, ब्र.कु. सम्पा तथा अन्य।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,

पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,

Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये,

आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक)

कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या

बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।



भीतर की शक्ति से बाहरी बैक्टीरिया का सामना



ब्र.कु. शिवानी,
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

हमारे शरीर में बैक्टीरिया पहले से ही होते हैं। जैसे ही हमारे शरीर की इम्युनिटी पावर कमजोर होती है तो छोटे-छोटे वायरस भी थोड़ा-सा मौसम बदलते ही हमारे शरीर पर हमला कर देते हैं। यदि मैं मजबूत रहती हूँ तो बाहर का मौसम भले बदले, तूफान हो, बर्फ पड़े हमारे ऊपर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मैं अपना ध्यान नहीं रखूँ और सिर्फ बोलती रहूँ कि मौसम ठीक नहीं है, सर्दी इतनी बढ़ गई, गर्मी बढ़ गई है तो बीमार पड़ना ही है। स्वस्थ रहना है या बीमार रहना है ये दोनों विकल्प हमारे पास है। जैसे हम अपने शरीर का ध्यान रखते हैं वैसे ही हमें अपने मन का भी ध्यान रखना होगा। यह उस समय नहीं होगा जब परिस्थितियाँ आती हैं। आप अपने शरीर के अंदर ताकत तब नहीं

भरते हैं जब मौसम बदलता है। आप हर दिन शरीर का ध्यान रखते हैं, फिर चाहे बाहर कितना भी परिवर्तन क्यों न आए वह आपको अंदर से प्रभावित नहीं कर सकता।

शरीर के अंदर शक्ति है कि वह बाहर के परिवर्तन के साथ शरीर का सामंजस्य बैठाकर संतुलन बना लेती है। अगर बाहर से इन्फेक्शन आ रहा है तो शरीर की इम्युनिटी पावर उसे कब खत्म कर देती है हमें इसका पता भी नहीं चलता है। और हम सामान्य रूप से कार्य करते रहते हैं। उसी तरह अगर हम मन का भी ध्यान रखें, उसकी रोज सफाई करें, पोषण दें, व्यायाम करें तो बाहर कब क्या होगा और चला जाएगा आपको पता भी नहीं चलेगा। जब जैसी परिस्थिति होती है वैसी ही हमारी खुशी भी हो जाती है क्योंकि यह कुछ-कुछ बाहर की बातों पर निर्भर करती है। लेकिन इसकी अपनी कोई ताकत नहीं है जो हमारी खुशी को प्रभावित कर सके। आप अच्छा बोलो तो खुश, आप अच्छा नहीं बोलो तो भी खुश। इसलिए हमने पहले भी कहा था कि ध्यान रखना। बैक्टीरिया भले आए, कोई बहुत कुछ बुरा भला भी कह दे, कोई नाराज हो जाएगा, बच्चे संतुष्ट नहीं होंगे, बॉस गुस्सा हो जाएगा, ये सब बैक्टीरिया ही

तो हैं जो बाहर से आते हैं।

आज बच्चे बहुत अच्छी तरह से बात कर रहे हैं कल अचानक उन्होंने कुछ गलत बोल दिया, ये सब परिवर्तन ही तो है जो मौसम में बदलाव लाया है। हमारे अंदर वो शक्ति है जो हम इसका सामना कर सकते हैं। जो स्वयं को सुरक्षित नहीं करेगा वो तो कष्ट सहन करेगा ही फिर चाहे वो शारीरिक हो या भावनाओं के रूप में हो। क्योंकि हमें भावनात्मक सुरक्षा के बजाए शारीरिक सुरक्षा करना आसान लगता है। इसलिए हम इमोशनल हेल्थ की तरफ ध्यान ही नहीं देते हैं। जब हम अपनी इमोशनल हेल्थ की सुरक्षा करना शुरू कर देंगे तब यह भी आसान हो जाएगा। फिर चाहे कोई कुछ भी बोले हमें फर्क नहीं पड़ेगा। एक दिन आप अपने आपको जांचना कि किसी ने आपसे बात नहीं की, बेइज्जती कर दी, अपमानित कर दिया, कुछ उल्टा-सीधा बोल दिया, तो ऐसी परिस्थिति में मैं क्या कर सकती हूँ। क्या मैं इतनी कमजोर हूँ कि हर किसी के व्यवहार को अपने ऊपर हावी होने दूँ। अगर हम अपना सारा नियंत्रण बाहर को दे देंगे तो दुःखी हो जाएंगे। क्योंकि बाहर चुनौतियाँ बहुत ज़्यादा हैं। इसीलिए स्वयं पर नियंत्रण स्वयं को ही रखना है।

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

कांटम फिज़िक्स में एक बात होती है कि वो हर वक्त कणों को लेकर, मूवमेंट्स को लेकर बात करता है। अगर हवा ना हो तो हम जो बोलेंगे वो दूसरे के पास पहुंच नहीं सकता। यदि आग हो, पानी हो, लेकिन स्पेस न हो, तो हम उसको ना छू सकते हैं, न पी सकते हैं। इसलिए हर एक चीज़ आज मूव तो कर रही है, चल रही है, लेकिन उसको चलाने में प्रकृति का बहुत योगदान है। हमारा शरीर भी इन छोटे-छोटे कणों से मिलकर बना है। तो पूरे शरीर की प्रक्रिया संकल्प के आधार से ही तो है।

अगर अपने शरीर को आप सूक्ष्मदर्शी से देखो तो इसमें चारों तरफ मूवमेंट्स होती रहेगी। इलेक्ट्रॉन, प्रॉटोन, न्यूट्रॉन, इससे भी छोटे-छोटे कण इसमें मूव कर रहे हैं लेकिन हमारी आँखों से दिखाई नहीं देते। इसी प्रकार हमारे संकल्पों की भी ऊर्जा है जो एक कण की भांति हर समय मूव कर रही है, चल रही है। जैसे आपने सोचा या सोचने मात्र का संकल्प भी आया तो वो एक कण की भांति समझो आपके अंदर से निकल गया। जैसे आपके अंदर एक छोटा-सा संकल्प आता है कि मुझे कुछ खाना है। तो थोड़ी देर बाद वो संकल्प बदल जाता है। और आप बिज्जी हो जाते हैं। लेकिन जो आपने इससे पहले सोचा कि कुछ खाने का मन कर रहा है, वो ट्रेवल कर रहा है जहाँ बैठकर आपने सोचा था। अब वहाँ पर जो भी व्यक्ति आयेगा और थोड़ी देर के लिए खड़ा होगा तो उसको भी भूख लगने लग जायेगी। वो उन संकल्पों का प्रभाव है जो आपने वहाँ छोड़ा था।

इसी तरह से हम जहाँ भी जाते हैं, उस समय हमारे संकल्प कुछ और चल रहे होते हैं, लेकिन वहाँ जाने पर हमें और ही कुछ फीलिंग आने लगती है तो अवश्य ही वहाँ ऐसी बातों के संकल्प होंगे ही होंगे। क्योंकि आपने तो ऐसा कुछ सोचा नहीं था। हाँ, ये हो सकता है कि कुछ न कुछ, कभी न कभी, छोटे-मोटे ऐसे संकल्प आपके चले हों जो वो कण मूव करके, आपको खींचकर वहाँ ले जायें। ये बहुत सूक्ष्म बात है क्योंकि संकल्पों की गति और उसकी तीव्रता का आंकड़ा हम नहीं लगा सकते। इसलिए छोटे-छोटे संकल्प हमारे इतने शक्तिशाली हैं कि हम क्या कुछ नया नहीं कर

सकते! इसलिए संकल्प करते हुए बस थोड़ा-सा ध्यान दें कि समय बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रहा है या बदल रहा है। हो सकता है हमारे संकल्पों की गति का प्रभाव ही है जो सबकुछ अब पहले

एक कण की भांति है संकल्प

जैसा नहीं रहा।



हम आज छोटी-छोटी बातों में परेशान हो जाते हैं, डिस्टर्ब हो जाते हैं। वो सारे संकल्प भी तो

कणों के रूप में हर ओर बिखरे पड़े हैं। जब कोई इसके बीच में आता है तो वो भी उन्हीं संकल्पों के प्रभाव से प्रभावित हो जाता है। दुःख, दर्द, तकलीफ के संकल्प हमारे, उन लोगों को इतनी अच्छी तरह से मिलते हैं जो आज दुःख, दर्द में जी रहे हैं। फटाफट वो उन लोगों को प्रभावित करते हैं और वे और भी ज्यादा इसके साथ जीने लग जाते हैं और कहते हैं कि इस समय तो माहौल ही ऐसा है, इसलिए हमें थोड़ा अब अपने आप को सम्भालना है, अच्छे संकल्प जानबूझकर पैदा करने हैं। हर स्थान पर उन बातों को पैदा करें, हर समय उन संकल्पों को लेकर आगे बढ़ें जिनसे समाज के अंदर उन बातों का प्रभाव जाये, जिससे व्यक्ति शक्तिशाली बने। जैसे सब स्वस्थ रहें, सब खुश रहें, सबके अंदर शक्ति आये, सब गलत समय में अपने आपका ध्यान रखें, परिस्थितियों का ध्यान रखें। और ये परिस्थितियाँ जब भी आयें तो उसका सामना भी कर पायें। हम आज सोशल मीडिया पर बहुत

एक्टिव हैं, इतना एक्टिव हैं कि उसमें दुखद समाचार की लिस्ट इतनी ज़्यादा है कि जिसे हमने देखा भी नहीं होगा, सोचा भी नहीं होगा, वो भी हमारे अंदर आने लग जाते हैं। इसलिए कोशिश करके अपने आपको सोशल मीडिया से थोड़ा-सा दूर रख, आप सिर्फ अच्छा-अच्छा सोचने का प्रयास करें। हमारे संकल्प सबसे ज़्यादा मदद करेंगे उन परिस्थितियों में जब संकट का समय होगा। इसलिए उठो जागो हे मानव, और अपने संकल्पों को और संकल्पों को पैदा करने वाले तथ्यों को समझो। समय बलवान जरूर है लेकिन समय से ज़्यादा बलवान हम हैं। क्योंकि हमने जो सोचा है आज तक वही हुआ है, ना कि समय अनुसार। इसलिए सत्य के साथ चलो, ना कि समय के साथ। सत्य के साथ चलने से सब अपने आप अच्छा हो जाता है। इसलिए संकल्प का एक कण भी सबको मजबूत बना सकता है। ये है मन की अद्भुत शक्ति।



बजरडीहा-उ.प्र.। सेवाकेन्द्र पर ज्ञान चर्चा के पश्चात् चित्र में स्वतंत्र प्रभार राज्य मंत्री रविन्द्र जायसवाल, ब.कु. सरोज, ब.कु. ओ.एन. उपाध्याय तथा अन्य।



असंध-हरियाणा। 'तनाव घटाओ व्यापार बढ़ाओ' कार्यक्रम के दौरान सांसद अंजू भाटिया, करनाल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. गीता दीदी, माउण्ट आबू, ब.कु. मेहरचंद तथा ब.कु. उषा।



चरखी दादरी(हरियाणा)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर जिला प्रशासन द्वारा जनता कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में समाज उत्थान हेतु किये गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए ब.कु. प्रियंका को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करते हुए बाढ़ड़ा विधायक नैना चौटाला। साथ है स्थानीय विधायक सोमवीर सांगवान, उपयुक्त श्यामलाल पुनिया तथा अन्य।



बरनाला-पंजाब। आध्यात्मिक प्रदर्शनी में सरदार गुरदीप सिंह, पीपीएस, सुपरीटेन्डेंट पुलिस हेड क्वार्टर को आत्मा और परमात्मा का परिचय देते हुए ब.कु. पुष्प।



मिर्जापुर-उ.प्र.। नवनिर्मित शिवशक्ति आध्यात्मिक संग्रहालय का शिवध्वजारोहण कर उद्घाटन करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में 39वीं बटालियन पी.ए.सी. कमांडेंट सुभाषचंद्र शाक्य, ब.कु. बिन्दु तथा अन्य भाई-बहनें।



कुरुक्षेत्र-विश्व शांति धाम (हरि.)। योग भट्टी कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए पंजाब ज़ोन के युथ विंग के कोऑर्डिनेटर ब.कु. अरुण, ब.कु. सरोज तथा अन्य।



आगरा-अवधपुरी(उ.प्र.)। महिला दिवस एवं होली मिलन समारोह में शिक्षिकाओं का सम्मान करने के पश्चात् समूह चित्र में ब.कु. अश्विना बहन, ब.कु. सरिता बहन, ब.कु. गीता बहन तथा ब.कु. राज बहन।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-13(2019-2020)

1	2	3		4		5	6	
7				8		9		10
			11					
			12			13	14	
	15		16		17		18	
19			20					
		21				22	23	
		24				25		
					26			27
	28			29			30	

ऊपर से नीचे

- आतंक, भय, डरावना (4)
- धूल के छोटे-छोटे कण (2)
- 5 विकारों में से एक मुख्य विकार (2)
- शोभनीक, शोभायमान (3)
- विजयी होना, पराजित करना (3)
- किसी चीज़ का निचला हिस्सा (2)
- सतयुग में सोने के...होते हैं (3)
- शालीनता, कुलीनता, भद्रता (4)
- चुस्त, उत्साही (2)
- आम सारी दुनिया...भारत का उद्धार बाबा करते हैं (2)
- लुप्त, छिपा हुआ, लोप (2)
- राजा, शासक (4)
- बेवजह, अनावश्यक (3)
- योग्य, उचित, ठीक (3)
- श्रेष्ठता, प्रधानता, उत्कृष्टता (4)
- राज्यसभा, सभागार (4)
- इज्जत, सम्मान (2)
- पथ, रास्ता (2)
- नशे में चूर, मदयुक्त (2)
- बोने के लिए कोई दाना, मूल कारण, एक स्थिति (2)

बाएं से दाएं

- जरूरत, आवश्यकता (4)
- ज्ञान-योग के शीतल छोटे से मूर्छित को...बनाओ (4)
- पचाना, समा लेना (3)
- धीमा, सुस्त (2)
- खोज, ढूँढ़ना (3)
- नगर, प्रदेश, कस्बा (3)
- स्वच्छ, धवल (2)
- पद, पढ़ाई से...मिलता है (3)
- दूरी, अन्तर (3)
- जिम्मेवारी, कर्तव्य, कर्म (2)
- बिचौलिया, आदती (3)
- अभी तुम बच्चों पर बृहस्पति की...बैठी है (2)
- ओ बाबा आपने...कर दिया (3)
- दुखियों पर...करो माँ-बाप हमारे, दया (3)
- श्रेष्ठता, गुरुता, बड़ाई (3)
- दरवाजा, द्वार (2)
- डूबा हुआ, ओझल, समाप्त (2)
- रहस्य, भेद (2)

-ब.कु. राजेश, शाल्विन

6

मई - II - 2020

ओमशान्ति मीडिया

गर्मियों में मन हो बुझा-बुझा तो खूब खाएं खरबूजा



और विटामिन्स शरीर में जरूरी पोषक तत्वों की कमी पूरी करते हैं।

फाइबर पाया जाता है जो खाने को आसानी से पचाकर कब्ज जैसी समस्याओं को दूर रखता है।

मिलाकर खाएं, तुरंत राहत मिलेगी।

अन्य फायदे

एसिडिटी

मसालेदार भोजन खाने के बाद यदि पेट में जलन और एसिडिटी की समस्या हो तो खरबूजा खाकर इसे दूर किया जा सकता है।

1. ककड़ी की तरह ये भी त्वचा की नमी को बनाये रखता है, दाग-धब्बों को हटा देता है।
2. दिल की बीमारियां, ब्लडप्रेसर और आर्टरीज की अकड़न को कम करता है।

फायदे

खरबूजे को मस्कमेलन भी कहते हैं। वहीं इसे दुनिया में रॉक मेलन भी कहते हैं। इसकी पैदावार इंडिया, इरान और अफ्रीका में ज्यादा होती है, खासतौर पर गर्मियों के मौसम में अप्रैल से लेकर अगस्त तक। स्वाद के साथ गर्मियों में खरबूजे का सेवन शरीर को ठंडक पहुंचाता है। साथ ही इसमें मौजूद पानी, मिनरल्स

1. गर्मियों के मौसम में अक्सर शरीर में पानी की कमी हो जाती है। जिसमें खरबूजा खाकर उसे काफी हद तक कम किया जा सकता है।
2. लू से बचने के लिए आप खरबूजा खाकर बाहर निकलें, इससे लू से बचाव होगा।

कब्ज में आराम पहुंचाये

इसमें काफी मात्रा में पानी और

स्वास्थ्य

डायरिया से राहत

डायरिया की समस्या से यदि कोई परेशान है तो खरबूजे को काली मिर्च, सेंधा नमक, भूने हुए जीरे और अदरक के साथ

3. कैंसर और डायबिटीज को भी कम करने में सहायक है।
4. बालों के गिरने की समस्या को कम करके उसे पोषण प्रदान करता है। बालों के विकास के लिए फायदेमंद है।

बदलते वक्त में खुद पर भरोसा रखें



समय सबका बदलता है। जिनके घर कभी आए दिन दिवाली मना करती थी, एक दिन उनकी मुंडेरों पर दीया जलाने वाला भी कोई नहीं रहता। हो सकता है वर्षों पहले हमारा वक्त बहुत अच्छा हो, आज खराब हो जाए। या किसी समय बहुत बुरा था, आज अच्छा हो जाए। हमने देखा है कि

जब किसी का अच्छा समय आए तो अहंकार माथे पर चढ़कर नाचने लगता है, बुरा दौर आए तो मरने की सोचते हैं। समय अपना काम सबके प्रति दिखाता है इसलिए काल को भारतीय संस्कृति में देवता मानकर पूजा गया है। जब कभी आपका समय बदल रहा हो (अच्छा हो या बुरा) तो पांच चीजों को सावधानी से देखिएगा। उस बदलते समय में पहली भूमिका होगी कोई आसमानी-सुलतानी घटना। दूसरी परिस्थितिजन्य होगी, तीसरी व्यक्तियों के कारण, चौथा कारण अज्ञात हो सकता है और पांचवा सबसे महत्वपूर्ण है आप स्वयं। अपने बदलते वक्त की सबसे बड़ी जिम्मेदारी खुद लीजिए और जब समय बदल रहा हो तो उसे तीन भागों में बांटिए - भूतकाल, वर्तमान और भविष्य। फिर बारीकी से देखिए कि आज मेरा आच्छा समय है तो भूतकाल में कैसा था, वर्तमान में इस अच्छे दौर का कैसे लाभ उठाऊं और यदि भविष्य में यही अच्छा दौर बुरा हो जाए तो उसे लेकर मेरी क्या तैयारी होगी? वक्त बदलने पर सबसे अधिक भूमिका हमारी खुद की होनी चाहिए। दूसरों पर बहुत अधिक टिक गए तो वक्त अच्छा हुआ तो भी गड़बड़ा जाएंगे।



दिल्ली-ओमविहार। विधायक नरेश बाल्यान का पुष्प गुच्छे से स्वागत करते हुए ब.कु. विमला। साथ है अन्य अतिथि।



केरू-हरियाणा। महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सी.डी.पी.ओ. कांता यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. शोभा तथा ब.कु. मोनिका।



वहादुरगढ़-हरि। नवनिर्मित प्रभु पसन्द भवन सेवाकेन्द्र का उदघाटन करने के पश्चात् चित्र में ओ.आर.सी. निदेशिका ब.कु. आशा, उप-क्षेत्रीय निदेशिका ब.कु. अम्बिका, बेलगाम, पूर्व विधायक नरेश कौशिक, ब.कु. नीलू, ब.कु. इंद्रा, भिलवाड़ा, सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. अंजली, ब.कु. रेनु, ब.कु. विनीता तथा अन्य।



हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। महिला दिवस पर 'सशक्त महिला राष्ट्र की आधारशिला' विषयक कार्यक्रम में शरीक हुए जल संरक्षण पर बनी फिल्म की निदेशिका बहन हेमाराज, दूर पब्लिक स्कूल की कोऑर्डिनेटर नीतू बहन, आर.सी. कन्या इंटर कॉलेज की पूर्व प्रधानाचार्या उषा गुप्ता, सहली संगठन की उपाध्यक्षा दीपा चड्ढा, ज्वाइंट महिला ग्रुप की अध्यक्षा रेनु अरोरा, यूनिट डायरेक्टर गुंजन दोषित, सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. शान्ता तथा अन्य विभिन्न संगठनों में कार्यरत महिलायें।



लखना-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कार्यक्रम में कैडल लाइटिंग के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में पूर्व चेयरमैन कान्ति वर्मा, लखना एकेडमी की प्रधानाचार्य बहन वंदना, डॉ. अंकिता, ब.कु. प्रीति, ब.कु. वन्दना, ब.कु. मनोज तथा अन्य।



पुखरायां-उ.प्र.। शिवजयंती पर शोभा यात्रा को शिवध्वज दिखाकर रवाना करते हुए सत्य प्रकाश शखवार, नगर पालिका परिषद अध्यक्ष, पुलिस चौकी इंचार्ज, ब.कु. ममता तथा अन्य भाई-बहनें।



हापुर-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 'समाज के उत्थान में नारी का योगदान' विषयक कार्यक्रम में पूर्व नगरपालिका अध्यक्षा मालती भारती को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. ज्योति तथा ब.कु. स्वर्णा।



बाबा ने अमृत पिलाकर मूक को दिया स्वर

ब.कु. बबन, मीरा सोसाइटी, पुणे

20 साल पहले की बात है, मैं अपने दोस्तों के साथ गेंद खेल रहा था। पुणे कस्बा पेट में जहाँ हम खेल रहे थे, वहाँ सामने ही ब्रह्माकुमारी गीता पाठशाला थी। दरवाजा खुला होने के कारण हमारी गेंद पाठशाला के अंदर चली गई और पिता श्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा की तस्वीर से जा टकराई। कांच की तस्वीर के टुकड़े-टुकड़े हो गए। वहाँ की बूढ़ी-बूढ़ी माताओं ने हमें अंदर बुलाया। हमने सोचा कि अब तो यह माताएँ हमें डांटेंगी और घर तक हमारी बहादुरी का समाचार पहुंच जाएगा। लेकिन हुआ उल्टा, उन्होंने बहुत ही प्यार से हमें बिठाया, प्रसाद (टोली) दिया, बाबा का परिचय दिया और रोज़ आने के लिए कहा। बचपन की उस अवस्था में ज्ञान तो इतना समझ में नहीं आया लेकिन यहां की माताएं बहुत अच्छी हैं, यहाँ रोज़ प्रसाद मिलता है, ऐसा सोच कर मैं रोज़ आने लगा। इस तरह से मेरा दिव्य अलौकिक जन्म हुआ। जन्म से

ही मैं गूंगा था। घर की आर्थिक स्थिति बिल्कुल साधारण थी इसीलिए पढ़ाई भी नहीं हो पाई। अलौकिक जन्म के बाद एक गुरुवार के दिन माताएं मुझे मीरा सोसाइटी सेंटर पर लेकर गईं। मैं क्लास में सबसे पीछे, कोने में बैठ गया क्योंकि फटे और गंदे कपड़ों के कारण मुझे बहुत शर्म आ रही थी।

प्यारे बाबा की मुरली की समाप्ति के पश्चात् मुझे जब अमृत जल पिलाया गया तो मुख में जल जाते ही तेज़ दर्द हुआ। और शीघ्र ही मुख ठंडा भी हो गया। मेरे मुख से आवाज़ निकलने लगी। मैं बाबा...बाबा...कहने लगा। मुझे जैसे कि स्वर्गीय आनंद मिला। माताओं को भी आश्चर्य हुआ कि यह भगवान की कैसी लीला है। मैं बोलने लगा, यह शुभ समाचार सुनकर लौकिक परिवार भी चकित हो गया।

तब से मेरा भोजन शुद्ध हो गया। अभी भी मेरी वाचा इतनी स्पष्ट तो नहीं है लेकिन फिर भी दैवी परिवार और लौकिक परिवार

सहज समझ लेते हैं। बचपन से ही आदरणीया सुंदरी दीदी जी की अलौकिक मां जैसी पालना मिल रही है। मेरे जैसे गांव के छोरे को, गूंगे को वाचा देकर परमात्मा शिव पिता ने मेरा जीवन ही बदल दिया। मानो मुझे नई ज़िंदगी मिल गई हो। संगमयुग पर ही मुझे साहूकार बना दिया। मैं धन्य-धन्य हो गया। कितना धन्यवाद दूँ प्यारे बाबा को। अभी तो दिल में बाबा, वाणी में बाबा, कर्म में बाबा, नज़र में भी एक बाबा ही रहता है। मैं जहाँ भी लौकिक-अलौकिक कार्यक्रम में जाता हूँ तो सभी को यह अनुभव सुनाता हूँ। सुनने वाले बाबा के इस चमत्कार से बहुत आश्चर्यचकित भी होते हैं और उनका परमात्मा में निश्चय भी बढ़ जाता है। मुझे सम्पूर्ण निश्चय है कि भगवान ही सुख कर्ता, दुःख हर्ता और 21 जन्मों के लिए ज़िंदगी संवारने वाला है। ऐसे पिता को बहुत ही प्यार से याद कर भाग्य बनाने की अनमोल घड़ियाँ अभी हैं, अभी नहीं तो कभी नहीं।



मथुरा-कृष्णा विहार (रिफाइनरी नगर)। महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में शरीक हुए रिफाइनरी की संविदा मैनेजर हंसा परेता, भारतीय स्टेट बैंक की शाखा प्रबंधक नेहा चतुर्वेदी, रिफाइनरी की वित्त मैनेजर मेहा यादव, यूके पब्लिक स्कूल की प्राचार्या गीतिका नागर, उभरती गायिका हिमांशु पॉल तथा अन्य प्रतिष्ठित महिलायें। सभी महिलाओं को सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कृष्णा बहन ने माफेटो देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर मानवाधिकार संरक्षण एवं समाज कल्याण विकास फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष नेत्रपाल सिंह तथा अन्य पदाधिकारियों ने महिलाओं के आध्यात्मिक उत्थान के लिए किये जा रहे उल्लेखनीय कार्यों हेतु ब्र.कु. कृष्णा बहन को सम्मानित किया तथा ऋषिकुल इंटरनेशनल स्कूल के प्राचार्य ललित शर्मा ने आदर्श विकास रत्न से सम्मानित किया।



मसूरी। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् सभासद मनीषा खरोला को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मंजू।



राजगीर-नालंदा (विहार)। ज्ञान चर्चा के पश्चात् नालंदा यूनिवर्सिटी की वाइस चांसलर सुनैना सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पूनम।



शामली-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'महिला सशक्तिकरण' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए इनर व्हील क्लब की अध्यक्षा पिकी बहन, प्रसिद्ध समाजसेवी बीना अग्रवाल, ब्र.कु. राज तथा अन्य।



सफीदों-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए लक्ष्मी स्पाइन थेरेपी की डिस्ट्रीब्यूटर श्रीमति सुषमा, रास कला मंच की सदस्य श्रीमति रुचि भारद्वाज, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. स्नेह तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।



शमसाबाद-आगरा (उ.प्र.)। महिला दिवस पर आयोजित 'महिला जन जागृति' रैली का शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. भाई बहनें।



सोनीपत-हरि.। शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए कविता जैन, पूर्व कैबिनेट मिनिस्टर, हरि., ब्र.कु. अमीरचंद, समाज सेवा प्रभाग उपाध्यक्ष, ब्र.कु. सरला दीदी तथा अन्य सोनियर टीचर्स।



दिल्ली किंम्वे। महाशिवरात्रि कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. साधना, ब्र.कु. राजकुमारी, मजलिस पार्क, विधायक दिलीप पाण्डेय तथा अन्य।



आजमगढ़-उ.प्र.। नशामुक्ति प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात् डिप्टी कमिश्नर बाल कृष्ण मोहन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रंजना अन्य।



दिल्ली-बवाना। अलविदा डायबिटीज कार्यक्रम में मंचासीन हैं सी.आई.एस.एफ. डिप्टी कमाण्डेंट ओम प्रकाश, चेम्बर ऑफ इंडस्ट्रीज के चेयरमैन प्रकाश चंद जैन, ब्र.कु. डॉ. श्रीमन्त साहू, ब्र.कु. चंद्रिका तथा अन्य।



देहरादून-प्रेमनगर। जल शक्ति अभियान जागरूकता कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. जे.के. पाण्डेय, सीता राम भट्ट, सतेंदर नेगी, सार्थक वोहरा, ब्र.कु. मंजू तथा अन्य।



दस्तारा-शिवहर (विहार)। ज्ञान चर्चा के पश्चात् बी.डी.ओ. अमित कुमार को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. सुनीता।

पाप कर्म और विकर्म में अन्तर

परमात्मा के महावाक्य हम सभी सुनते हैं। परमात्मा की मुरली से हमें अपने दिल दर्पण में देखना है कि हम कहाँ तक पहुँचे हैं। उसको हम जान सकें और समझ सकें। तो इसीलिए ये महावाक्य हम बच्चों को जैसे बार-बार अटेन्शन खिंचवाते हुए हमें महसूस कराते हैं कि पुरुषार्थ की रस में आगे के आगे बढ़ते रहना है। बाबा के अन्तिम महावाक्य निराकारी भव, निरहंकारी भव, निर्विकारी भव और जैसे ही बाबा ये अन्तिम महावाक्य कहते हुए हम बच्चों को ये बताने का प्रयत्न कर रहे थे कि सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए इन तीन बातों पर भी हम अगर अटेन्शन दें तो सम्पूर्णता दूर नहीं। दूसरा बाबा का जो भाव था कि मैंने जो सम्पूर्णता को प्राप्त किया है इन्हीं तीन बातों पर अटेन्शन दिया है। स्थिति या मनसा में निराकारी स्थिति। जब तक निराकारी स्थिति हमारी नहीं है तब तक हम विजय श्री नहीं पा सकते। बाबा कहते हैं कि बच्चे देह सहित, देह के सभी सम्बन्धों को बुद्धि से हटाए सिर्फ एक मेरे साथ जोड़ो। सत्य के साथ जोड़ो या परमात्मा के साथ जोड़ो क्योंकि वही सुख दाता है। कहने का भावार्थ यही है कि स्थिति जितनी हमारी ऊँच होगी, जितनी साकारी से आकारी, आकारी से निराकारी में हम कदम आगे बढ़ाते जायेंगे और उतनी ये स्थिति हमारी निरन्तर होने लगेगी। देही अभिमानी कहो, आत्म अभिमानी कहो। देही अभिमानी जब हम कर्म करते हैं और आत्म अभिमानी जब हम विशेष योग में बैठते हैं उस समय ये देह भी भूली हुई हो। और सिर्फ एक निराकारी स्थिति हमारी मजबूत हो। और जितनी हमारी स्थिति मजबूत बनती जायेगी उतना मन के अन्दर कोई भी प्रकार का व्यर्थ का कीचड़ होगा या कोई भी प्रकार का और थॉट होगा वो सम्पूर्ण रीति से समाप्त हो जायेगा। परमात्मा का कहना है कि बच्चे निराकारी बनने का अर्थ है कि हमारे पाप-कर्म देह समझने से शुरू होते हैं। जैसे ही हम अपने

आपको इस कॉन्शस मन में ले आते हैं तो हमारे संकल्प में मोह, लोभ ये आने लग जाते हैं। और जैसे ही ये सब शुरू होता है समझो पाप-कर्म बनना शुरू हो जाता है। कर हम शरीर और शरीर के सम्बन्धों के लिए होते हैं लेकिन होता



-ब्र.कु. उषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

ये तपस्या कितनी गहरी और लम्बी है जिस पर सिर्फ और सिर्फ अटेन्शन दें तो क्या कुछ नहीं हो जायेगा। रिअलाइजेशन तो तभी होगा ना क्योंकि ज्ञान में तर्क भी दे देंगे। लेकिन दिल दर्पण में दिल गवाही देना शुरू कर देगा कि नहीं ये सही नहीं हैं।

स्वार्थ है। जिसके कारण हर पल विकर्म बन रहा होता है। अब आप सोचो हम परमात्मा को प्रत्यक्ष करना चाहते हैं। लेकिन थोड़ी भी बुद्धि स्थूल में जा रही है तो हमारे से कैसे कर्म होंगे? इतना लम्बा समय हमको क्यों लग रहा है सम्पन्न होने में? क्योंकि जो मूल है वो कहीं बिखरा हुआ है। वो है अभ्यास। भगवान का रथ जिसको हम ब्रह्मा कहते हैं, जिन्होंने बार-बार अभ्यास करके अपने आपको देह से मुक्त किया। और देह से मुक्त अर्थात् देह जब भूले तो ऑटोमेटिकली देह के सम्बन्ध, देह के पदार्थ, देह के जो कुछ भी भाव, सब समाहित हो गये। और सारे विकर्म बन्द।

बस यही हम सभी को परमात्मा की तरफ से एक सैम्पल मिला जिसने अभ्यास किया और सिर्फ अभ्यास किया चलते-फिरते, उठते-बैठते, और वो आज फरिश्ते के रूप में सबके सामने उदाहरण है। इस दुनिया में हम चाहे कितने भी हथकंडे अपना लें। चाहे कितने भी अच्छे कर्म करने का दावा करें। लेकिन हमसे विकर्म होते ही हैं। हम निःस्वार्थ सेवा करने का दावा करते हैं लेकिन उसमें भी मान-शान की इच्छा है। उसका भी बोझ हमारे ऊपर तो है ना। और निराकारी जो है निराकारी अर्थात् जिसका कोई शरीर नहीं है उसको प्रकृति का कोई आकर्षण नहीं है। वो सबकुछ भगवान जैसा करने लग जाता है। उससे पाप होने बंद हो जायेंगे। ये तपस्या कितनी गहरी और लम्बी है जिस पर सिर्फ और सिर्फ अटेन्शन दें तो क्या कुछ नहीं हो जायेगा। रिअलाइजेशन तो तभी होगा ना क्योंकि ज्ञान में तर्क भी दे देंगे। लेकिन दिल दर्पण में दिल गवाही देना शुरू कर देगा कि नहीं ये सही नहीं हैं। तो इसीलिए एक तो दिल का दर्पण है और एक ज्ञान का दर्पण है। और कौन सा दर्पण है? और ब्रह्मा बाबा के प्रत्यक्ष जीवन का दर्पण है। परमात्मा कई बार अपने अव्यक्त महावाक्यों में कहते आए हैं कि अगर ना समझ में आये तो देखो कि अगर ब्रह्मा बाबा इस स्थान पर होते तो क्या करते? क्या बाबा ऐसा कहते थे? बाबा ऐसा करते थे? सिचुएशन क्या बाबा के सामने नहीं आई? आई ना! लेकिन जो बहाना मैं दे रही हूँ या दे रहा हूँ तो मेरी जगह अगर बाबा होते तो क्या करते? ये दर्पण अगर सामने ले आओ साकार बाबा का तो जैसे दूध का दूध, पानी का पानी हो जाता कि बाप होता तो क्या करता? तो बाबा का एक प्रत्यक्ष जीवन का दर्पण मिला है। और कौन-सा दर्पण मिला है? श्रीमत का दर्पण मिला है हमें। इसलिए आज से और अभी से हमें निराकारी स्थिति का अभ्यास करना है। स्थिति बनाने का बस यही एक तरीका है।

! यह जीवन है !

आप इस संसार में कई लोगों को जानते होंगे जिन्हें आप स्वार्थी मानते हैं, जो आवश्यकता पड़ने पर ही आपको स्मरण करते हैं। किंतु जैसे ही आपकी सहायता की आवश्यकता पड़ती है तो हाथ जोड़कर आपके सामने आते हैं। तब हमारे मन में उसके प्रति बड़ा ही क्रोध आता है, मन में बहुत दुख होता है। और उस समय मन से यह स्वतः निकलता है कि दुबारा इस व्यक्ति की सहायता न करें। परन्तु ऐसा कभी मत किजिए...! यह याद रखिए दीपक का स्मरण व्यक्ति तभी करता है, जब अंधकार गहरा हो जाता है। उन्हें स्वार्थी मानकर व्याकुल मत होंए बल्कि स्वयं को दीपक मानकर आनंदित होंए। भाग्यवान समझिए खुद को कि आप इस संसार में किसी की सहायता करने योग्य हैं। किसी के स्वार्थी होने से स्वयं का दृष्टिकोण मत बदलिए।

ख्यालों के आईने में...



नदी में गिरने से किसी की जान नहीं जाती, जान तभी जाती है जब तैरना नहीं आता। परिस्थितियाँ कभी समस्या नहीं बनती, समस्या तभी बनती है जब हमें परिस्थिति से निपटना नहीं आता।

शीशे की तरह चरित्रवान बनो ताकि लोग तुम्हें देखकर अपने चरित्र के दोषों को दूर करें, जैसा कि वे शीशे को देखकर अपने चेहरे के दोषों को दूर करते हैं।



करनाल-हरियाणा। ब्रह्माकुमारिज के मेडिकल विंग द्वारा आयोजित '3डी हेल्थ केयर' शिविर का शुभारम्भ करते हुए सांसद संजय भाटिया, मेयर रेणु बाला गुप्ता, कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. सतीश गुप्ता, माउण्ट आबू, डॉ. राहुल, माउण्ट आबू, ब्र.कु. प्रेम बहन तथा ब्र.कु. मेहरचंद। कार्यक्रम में उपस्थित रहे नगर निगम के डिप्टी कमिश्नर धीरज कुमार, पार्षद मुकेश अरोड़ा, पार्षद वीर विक्रम कुमार, डॉ. डी.डी. शर्मा, डॉ. के.के. चावला, डॉ. आर.के. महानी, डॉ. अवतार सिंह, डॉ. जी. एस. शर्मा, तथा डॉ. वधवाव हरिकृष्ण नारंग।



जयपुर-राजापार्क। ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र की ओर से राजमंदिर सिनेमा हॉल में 'गॉड ऑफ गॉड्स' फिल्म का शुभारम्भ करते हुए डॉ. कृष्ण कांत पाठक, आईएएस महिला बाल विकास डायरेक्टर राजस्थान सरकार, कृषि अनुसंधान केन्द्र के डायरेक्टर शरद जोधा, अंतर्राष्ट्रीय वैश्य समाज राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष सुरेश पाटोदिया, सेंट जोसेफ, गुरुवाणी चिंतक डॉ. मनजीत कौर, श्री 108 श्री श्यामदास महाराज, श्याम कुटिया, उपक्षेत्रिय निदेशिका ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. स्नेह, सोडाला, ब्र.कु. प्रीति, ब्र.कु. सन्तू तथा ब्र.कु. पूजा।



वही है जो आप हैं

कथा सरिता...

एक छोटे से गांव के बाहर सुबह-सुबह एक बैलगाड़ी आकर रुकी। और उस बैलगाड़ी में बैठे हुए आदमी ने उस गांव के द्वार पर बैठे हुए एक बूढ़े से पूछा, इस गांव के लोग कैसे हैं? मैं इस गांव में हमेशा के लिए स्थायी निवास बनाना चाहता हूँ। उस बूढ़े ने कहा- मेरे मित्र, अजनबी मित्र, इसके पहले कि मैं तुम्हें बताऊं कि इस गांव के लोग कैसे हैं, क्या मैं पूछ सकता हूँ कि उस गांव के लोग कैसे थे, जिससे तुम आ रहे हो?

उस आदमी ने कहा- उनका नाम और उनका ख्याल ही मुझे क्रोध और घृणा से भर देता है।

उन जैसे दुष्ट लोग इस पृथ्वी पर कहीं भी नहीं होंगे। उन शैतानों के कारण ही, उन पापियों के कारण ही तो मुझे वह गांव छोड़ना पड़ा है। मेरा हृदय जल रहा है। मैं उनके प्रति घृणा से और प्रतिशोध से भरा हुआ हूँ। उनका नाम भी न लें। उस गांव की याद भी न दिलाएं।

उस बूढ़े ने कहा- फिर मैं क्षमा चाहता हूँ कि आप बैलगाड़ी आगे बढ़ा लें। इस गांव के लोग और भी बुरे हैं। मैं उन्हें बहुत वर्षों से जानता हूँ। वह बैलगाड़ी आगे बढ़ी ही थी कि एक घुड़सवार आकर रुक गया और उसने भी यही पूछा उस बूढ़े से कि इस गांव में निवास करना चाहता हूँ। कैसे हैं इस गांव के लोग?

उस बूढ़े ने कहा- उस गांव के लोग कैसे थे जहाँ से तुम आ रहे हो? उस घुड़सवार की आँखों में आनंद के आंसू आ गए। उसकी आँखें किसी दूसरे लोक में चली गईं। उसका हृदय किन्हीं की

स्मृतियों से भर गया और उसने कहा, उनकी याद भी मुझे आनंद से भर देती है। कितने प्यारे लोग थे। और मैं दुःखी हूँ कि उन्हें छोड़कर मुझे मजबूरियों में आना पड़ा है। लेकिन एक सपना मन में है कि कभी फिर उस गांव में वापस लौट कर बस जाऊँ। वह गांव ही मेरी कब्र बने, यही मेरी कामना है। बहुत भले थे वे लोग। उनकी याद न दिलाना। उनकी याद से ही मेरा दिल टूटा जाता है। उस बूढ़े ने कहा- इधर आओ, हम तुम्हारा स्वागत करते हैं। इस गांव के लोगों को तुम उस गांव के लोगों से भी अच्छा पाओगे। मैं इस गांव के लोगों को भलीभाँति जानता हूँ। काश, वह पहला बैलगाड़ी वाला आदमी भी इस बात को सुन लेता। लेकिन वह जा चुका था।

शिक्षा : इस पृथ्वी पर आप वैसे ही लोग पाएंगे जैसे आप हैं। आपके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है पृथ्वी! जीवन वही है जो आप हैं।

एक वन में बहुत बड़ा अजगर रहता था। वह बहुत अभिमानी और अत्यंत क्रूर था। जब वह अपने बिल से निकलता तो सब जीव उससे डरकर भाग खड़े होते। उसका मुँह इतना विकराल था कि खरगोश तक को निगल जाता था। एक बार अजगर शिकार की तलाश में घूम रहा था। सारे जीव अजगर को बिल से निकलते देखकर भाग चुके थे। जब अजगर को कुछ न मिला तो वह क्रोधित होकर फुफकारने लगा और इधर-उधर खाक छानने लगा।

वहीं निकट में एक हिरणी अपने नवजात शिशु को पत्तियों के ढेर के नीचे छिपाकर स्वयं भोजन की तलाश में दूर निकल गई थी। अजगर की फुफकार से सूखी पत्तियाँ उड़ने लगीं और हिरणी का बच्चा नज़र आने लगा। अजगर की नज़र उस पर पड़ी तो हिरणी का बच्चा उस भयानक जीव को देखकर इतना डर गया कि उसके मुँह से चीख तक न निकल पाई। अजगर ने देखते ही देखते नवजात हिरण के बच्चे को निगल लिया। तब तक हिरणी भी लौट आई थी, पर वह क्या करती? आँखों में आसूँ भरके दूर से अपने बच्चे को काल का ग्रास बनते देखती रही। हिरणी के शोक का ठिकाना न रहा। उसने किसी न किसी तरह अजगर से बदला लेने की ठान ली। हिरणी की एक नेवले से दोस्ती थी। शोक में डूबी हिरणी अपने मित्र नेवले के पास गई और रो-रोकर उसे अपनी दुःखभरी कथा सुनाई।

नेवले को भी बहुत दुःख हुआ। वह दुःख भरे स्वर में बोला मित्र, मेरे बस में होता तो मैं उस नीच अजगर के सौ टुकड़े कर डालता। पर क्या करें, वह



संगठन शक्ति

छोटा-मोटा सांप नहीं है, जिसे मैं मार सकूँ वह तो एक अजगर है। अपनी पूँछ की फटकार से ही मुझे अधमरा कर देगा। लेकिन यहाँ पास में चींटियों की एक बाँधी है। वहाँ की रानी मेरी मित्र है। उससे सहायता मांगनी चाहिए। हिरणी ने निराश स्वर में विलाप किया, “पर जब तुम्हारे जितना बड़ा जीव उस अजगर का कुछ बिगाड़ने में समर्थ नहीं है तो वह छोटी सी चींटी क्या कर लेगी?” नेवले ने कहा, “ऐसा मत सोचो, उसके पास चींटियों की बहुत बड़ी सेना है। संगठन में बड़ी शक्ति होती है।” हिरणी को कुछ आशा की किरण नज़र आई। नेवला हिरणी को लेकर चींटी रानी के पास गया और उसे सारी कहानी सुनाई। चींटी रानी ने सोच-विचार कर कहा, “हम तुम्हारी सहायता अवश्य करेंगे। हमारी बाँधी के पास एक संकरीला नुकीले पथरों भरा रास्ता है।

तुम किसी तरह उस अजगर को उस रास्ते पर आने के लिए मजबूर करो, बाकी काम मेरी सेना पर छोड़ दो।” नेवले को अपनी मित्र चींटी रानी पर पूरा विश्वास था इसलिए वह अपनी जान जोखिम में डालने पर तैयार हो गया। दूसरे दिन नेवला जाकर सांप के बिल के पास अपनी बोली बोलने लगा। अपने शत्रु की बोली सुनते ही अजगर क्रोध में भरकर अपने बिल से बाहर आया। नेवला उसी संकरे रास्ते वाली दिशा में दौड़ाया। अजगर ने पिछा किया। अजगर रुकता तो नेवला मुड़कर फुफकारता और अजगर को गुस्सा दिलाकर फिर पीछा करने पर मजबूर करता। इसी प्रकार नेवले ने उसे संकरीले रास्ते से गुज़रने पर मजबूर कर दिया। नुकीले पथरों से उसका शरीर छिलने लगा। जब तक अजगर उस रास्ते से बाहर आया तब तक उसका काफी शरीर छिल गया था और जगह-जगह से खून टपक रहा था।

उसी समय चींटियों की सेना ने उस पर हमला कर दिया। चींटियाँ उसके शरीर पर चढ़कर छिले स्थानों के नंगे मांस को काटने लगीं। अजगर तड़प उठा। उसके शरीर से खून टपकने लगा जिससे मांस और छिलने लगा और चींटियों को आक्रमण के लिए नए-नए स्थान मिलने लगे। अजगर चींटियों का क्या बिगाड़ता? वे हज़ारों की संख्या में उस पर टूट पड़ी थीं। कुछ ही देर में क्रूर अजगर ने तड़प-तड़पकर दम तोड़ दिया।

- किसी राज्य में राजा हुआ करता था, उसके पास एक सुन्दर-सा तोता था। वह तोता बड़ा बुद्धिमान था, उसकी मीठी वाणी और बुद्धिमत्ता की वजह से राजा उससे बहुत खुश रहता था। एक दिन की बात है कि तोते ने राजा से कहा कि मैं अपने माता-पिता के पास जाना चाहता हूँ। वह जाने के लिए राजा से विनती करने लगा।

तब राजा ने उससे कहा कि ठीक है पर तुम्हें पाँच दिनों में वापस आना होगा। वह तोता जंगल की ओर उड़ चला, अपने माता-पिता से जंगल में मिला और खूब खुश हुआ। ठीक पाँच दिनों के बाद जब वह वापस राजा के पास जा रहा था तब उसने एक सुन्दर-सा उपहार राजा के लिए ले जाने का सोचा। वह राजा के लिए अमृत फल ले जाना चाहता था। जब वह अमृत फल के लिए पर्वत पर पहुँचा तब तक रात हो चुकी थी। उसने फल को तोड़ा और रात वहीं गुज़रने का सोचा। वह सो रहा था कि तभी एक सांप आया और उस फल को खाना शुरू कर दिया। सांप के ज़हर से वह फल भी विषाक्त हो चुका था।

जब सुबह हुई तब तोता उड़कर राजा के पास पहुँच गया और कहा- राजन मैं आपके लिए

अमृत फल लेकर आया हूँ। इस फल को खाने के बाद आप हमेशा के लिए जवान और अमर हो जायेंगे। तभी मंत्री ने कहा कि महाराज पहले देख लीजिए कि फल सही भी है कि नहीं? राजा ने बात मान ली और फल में से एक टुकड़ा कुत्ते को खिलाया। कुत्ता तड़प-तड़प कर मर गया। राजा बहुत क्रोधित हुआ और अपनी तलवार से तोते का सिर धड़ से अलग कर दिया। राजा ने वह फल बाहर फेंक दिया। कुछ समय बाद उसी जगह पर एक पेड़ उगा। राजा ने सख्त हिदायत दी कि कोई भी इस पेड़ का फल ना खाएँ क्योंकि राजा को लगता था कि यह अमृत फल विषाक्त होते हैं और तोते ने यही फल खिलाकर उसे मारने की कोशिश की थी। एक दिन एक बूढ़ा आदमी उस पेड़ के नीचे विश्राम कर रहा था। उसने एक फल खाया और वह जवान हो गया क्योंकि उस वृक्ष पर उगे हुए फल विषाक्त नहीं थे। जब इस बात का पता राजा को चला तो उसे बहुत ही पछतावा हुआ, उसे अपनी करनी पर लज्जा हुई।

तीसरे राजकुमार के मुख से ये कहानी सुनकर राजा बहुत ही खुश हुआ और तीसरे राजकुमार को सही उत्तराधिकारी समझते हुए उसे ही अपने राज्य का राजा चुना।



शिमला-हिमाचल प्रदेश। सेवाकेन्द्र पर ज्ञान चर्चा के पश्चात् हिमाचल प्रदेश के पंचायती राज मंत्री वीरेंद्र कंवर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कृष्णा। साथ है ब्र.कु. प्रकाश, माउण्ट आबू।



राजौद-असंध(हरि.)। ब्रह्मकुमारीज द्वारा आयोजित 'आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा व्यापार में उन्नति' कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री कमलेश दांडा, ब्र.कु. मेहरचंद, करनाल, नगरपालिका चेंबरमैन गुड्डो प्रमोद राणा, पूर्व कार्यकारी अधिकारी नगरपालिका रामकरण राणा, कैथल, ब्र.कु. राजसिंह तथा अन्य अतिथिगण।



सादावाद-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए पूर्व सांसद राजेश दिवाकर की धर्मपत्नी व भाजपा जिला उपाध्यक्ष श्वेता दिवाकर, समाजसेवी श्वेता गोयल, हाथरस, मुरसान की पूर्व चेयरमैन किरण शर्मा, डॉ. ज्वाला सिंह, मुरसान के पूर्व चेयरमैन गिरिराज किशोर शर्मा, ब्र.कु. भावना तथा अन्य।



भुवनेश्वर-नागेश्वर तंगी। ज्ञान चर्चा के पश्चात् पूर्व सी.एम.डी.डॉ. एस.के. तमोठिया, भारतीय विद्या भवन, नालको को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. इंदुमती। साथ है उनकी धर्मपत्नी श्रीमति तमोठिया, ब्र.कु. विजय तथा अन्य।



वरनाला-महेश नगर(पंजाब)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सरदार जगमोत सिंह पानेसर, अध्यक्ष, सीनियर कमेटी मेम्बर्स नरेन्द्र शर्मा, मंगत राय बंसल मंगा, महेश नगर वेलफेयर एसोसिएशन तथा अन्य अतिथियों को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बृज बहन। साथ है ब्र.कु. सुदर्शन, ब्र.कु. पुष्प, ब्र.कु. सोमा, एस.डी.ओ. बी.एस.एन.एल. विजय शर्मा तथा प्रो. सोमा शर्मा।



भादरा-राज.। होली मिलन समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए भारत सैनिक कॉलेज के प्रिन्सीपल अमरदीप सिंह, बिज्ञनेसमैन विकास सराफ, व्यापार मंडल के पूर्व अध्यक्ष चम्पा लाल गोयल, बिजली बोर्ड से दीवान सिंह, ब्र.कु. चन्द्रकान्ता तथा अन्य।

बहुत समय पहले हरिशंकर नाम का एक राजा था। उसके तीन पुत्र थे और अपने उन तीनों



निर्दोष को सजा

पुत्रों में से वह किसी एक पुत्र को राजगद्दी सौंपना चाहते थे। पर किसे? राजा ने एक तरकीब निकाली और उसने तीनों पुत्रों को बुलाकर कहा-अगर तुम्हारे सामने कोई अपराधी खड़ा हो तो तुम उसे क्या सजा दोगे?

पहले राजकुमार ने कहा कि अपराधी को मौत की सजा दी जाए तो दूसरे ने कहा कि अपराधी को काल कोठरी में बंद कर दिया जाये। अब तीसरे राजकुमार की बारी थी। उसने कहा कि पिताजी सबसे पहले यह देख लिया जाये कि उसने गलती की भी है या नहीं।

इसके बाद उस राजकुमार ने एक कहानी सुनाई

परिवर्तन का मात्र एक आधार

लाइट का यहाँ अर्थ यह है कि ये ज्ञान, ये समझ, हमें जो मिली इसको सुनने के बाद हम कितने हल्के हुए। हमारा जितना-जितना हल्कापन होगा, उतना किसी कार्य को करने के बाद उस कार्य में शक्ति आयेगी। दुनिया की लाइट (बिजली) न हो तो फैन, कूलर, एसी बंद हो जाते हैं या कम हो तो भी नहीं चलता है, रुक जाता है। सभी कहते हैं कि आज लाइट ठीक से नहीं आ रही, इसीलिए ये कूलर नहीं चल रहा, एसी नहीं चल रहा। इसको चलाने के लिए हमको इतना लोड चाहिये तब जाकर ये एसी चलेगा। हम जब सुबह उठते हैं, उस समय हम परमात्मा से योग लगाते हैं तो हमारे अंदर की लाइट बढ़ जाती है, हम हल्के हो जाते, हमारा मन भी हल्का हो जाता, तन भी हल्का हो जाता है, अर्थात् लाइट हो जाता। लेकिन जैसे ही हम वहाँ से उठते हैं, दो तीन घंटे के बाद हमारी लाइट कट जाती है, और हम इनवर्टर पर आ जाते हैं। इनवर्टर पर आने के बाद न टीवी चलेगा, न एसी चलेगा, न कूलर चलेगा। वैसे ही जब लाइट हमारी कटती है तो हमारे शरीर के फंक्शन्स रुक जाते हैं और जो थोड़ी बहुत लाइट प्रीजर्व होती है हमारे ब्रेन में, उस ब्रेन के थू हम थोड़ी देर अच्छा चलते हैं, इसका लाइव एक्जाम्पल है जब हमको उबासी आनी शुरू हो जाए, इसका

मतलब हमारी एनर्जी लॉ हो गई। उस समय हम इनवर्टर पर चल रहे हैं। लेकिन जैसे ही कोई हमें कोई काम दे दे या बहुत अर्जेंट काम करना हो जिसके बिना काम नहीं चलता हो तो हमारी एनर्जी बढ़ जाती है और हम चार्ज हो

मेरे से कनेक्ट होकर फिर से अपने आप को चार्ज कर लो ताकि आपके अंदर बिजली आती रहे और आप लाइट फील करते रहो। अब ये लाइट इतनी जरूरी है कि जिस प्रकार अगर

जैसे कम्प्यूटर चलता है, और उसको हम दैनिक कार्यों में इस्तेमाल करते हैं, लेकिन कम्प्यूटर को चलाने के लिए लाइट की जरूरत है। कम्प्यूटर माइट है, अब आप देखो माइट को भी चलाने के लिए यदि लाइट न हो तो ठप्प पड़ जायेगा। ऐसे ही हमें यदि किसी बात में भारीपन है तो हम उस कार्य में भी वही भारीपन फील करायेंगे या डाल देंगे। और जो भी उस कार्य को देखेगा उसको भी देखकर भारीपन महसूस होगा, क्योंकि जैसे बिजली के ट्रान्सफॉर्मर से जिस लोड (2 फेज, 3 फेज या 1 फेज) का कनेक्शन आता है वैसे ही हमारे घर में बिजली की सप्लाय होती है और उससे ज़्यादा से ज़्यादा मशीनें चल सकती हैं।

जाते हैं। लेकिन उस समय ऐसी कोई हलचल न हो, ऐसा कार्य न हो तो हम आलसी बनकर बैठे रहते हैं, शरीर भी भारी-भारी लगता है। इसीलिए हमको हमेशा कुछ एक्टिवनेस या क्रियेटिविटी (रचनात्मकता) चाहिए, जो हमारे ब्रेन को जागृत रखता है। इसीलिए परमात्मा ने हमको बीच-बीच में कहा कि आप हर घंटे में एक बार

श्वास न चले तो शरीर खत्म हो जायेगा, वैसे ही अगर हम लाइट नहीं रहें तो हमारी शांति भंग हो जायेगी। इसलिए परिवर्तन की शक्ति लाने के लिए हमें शांति चाहिए और शांति के लिए लाइट होना बहुत जरूरी है। लाइट का ज्ञान परमात्मा ने दिया, समझ दी कि तुम शरीर नहीं आत्मा हो। आत्मा लाइट है। अगर आत्मा लाइट है तो वो

चारों
 तरफ फैल जाती है।
 यदि आत्मा लाइट है तो वो शांत है,
 यदि आत्मा लाइट है तो वो प्रेम स्वरूप
 है, यदि आत्मा लाइट है तो वो आनंद
 स्वरूप है, यही तो उसकी माइट है। तो
 ऐसी लाइट, ऐसी समझ हमें डेवलप

करनी है, जिससे हमारे शरीर के ऊपर वो माइट दिखे, वो शांति दिखे, वो प्रेम दिखे, तो उन्हें लगे कि ये तो इस दुनिया से वैरगी हैं। ये दुनिया में हैं भी और नहीं भी। इनको लग रहा है दुनिया से कोई लेना-देना नहीं है। वो शांति, प्रेम, आनंद आपकी शक्ति बनेगी और आपको देखकर लोगों को परिवर्तन आने लग जायेगा। इसमें एक और गहरी

बात है कि हम भी लाइट हैं और हमारा पिता निराकार शिव भी लाइट है और हमारा ज्ञान भी लाइट है। इसमें बताया गया कि



ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

निर्वाह अर्थ कुछ दिन यहाँ कार्य कर रहे हैं, जिसे सुनकर मन हल्का हो जाता है। और जितना मन हल्का होगा उतनी शांति की शक्ति चारों ओर फैलेगी और ये हम सबको ऑटोमेटिक पूरे विश्व में उन बातों के साथ जोड़ेगी जिन्हें जिस शक्ति की ज़रूरत होगी वो हमसे रिसीव करने लग जायेंगे। लेकिन पहले हम लाइट तो हों। परमात्मा के बच्चे यदि लाइट न हों तो कहाँ से शांति की शक्ति फैलायेंगे! उन्हें ही डर लग रहा है कि कहीं मैं मर गया तो, अरे हम तो पहले से ही मरे हुए हैं भाई! मरने की क्या बात है। तो यही एक मात्र आधार है अपनी लाइट को माइट बनाकर पूरे विश्व को परिवर्तन करने का। और इसके लिए सिर्फ जागृति की ज़रूरत है। ज्ञान हल्का है इसलिए आराम से दिया है, धीरे-धीरे दिया गया, बूंद-बूंद करके दिया गया। एकदम से नहीं उड़ेल दिया परमात्मा ने। जैसे एक बाल्टी पानी एक - शेष पेज 11 पर...

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन
को बदल दें



प्रश्न : मेरा नाम श्रेया है और मैं ओम शांति को काफी समय से फॉलो कर रही हूँ और बहुत बदलाव भी आया है। जो शांति छिपी हुई थी मेरे अन्दर अब वो मैं महसूस करती हूँ। मेरा एक छोटा-सा प्रश्न है कुछ समय पहले आपने बताया था कि हम योग के माध्यम से अपने नक्षत्रों को भी ठीक कर सकते हैं। मेरे नक्षत्रों में राहु, सूर्य, मंगल के त्रिकोण बन रहे हैं जो मेरी आगे की एजुकेशन, जॉब, मेरी फैमिली पर बहुत भारी पड़ सकते हैं। मैं इन सबको ठीक करना चाहती हूँ। क्या राजयोग में इसका कोई प्रावधान है?

उत्तर : एक तो इन चीजों से बहुत ज्यादा प्रभावित नहीं होना। और मैं तो आपको ये राय भी दूँगा कि ज्योतिषी में इनके छोटे-छोटे उपाय बता देते हैं। आपको किसी ज्योतिषी से भी मिलकर कोई उपाय कर लेना चाहिए। लेकिन जितना-जितना आपका योगाभ्यास बढ़ेगा और आप नौ ग्रह को साकाश देंगी, वायब्रेशनस देंगी तो उनका प्रभाव रहेगा तो सही, लेकिन बहुत कम हो जायेगा। क्योंकि वो भी तो आखिर कोई चीज है ना, कोई शक्ति हैं और ये सूक्ष्म शक्तियां भी अगर हम उनसे बहुत फ्रैन्डली हो जायें तो वो भी हमसे फ्रैन्डली हो जाती हैं। प्रकृति को भी हम अपना गुड फ्रेंड बना सकते हैं। एक अच्छा संकल्प अपने को देना है कि मैं परमपवित्र आत्मा हूँ। और रोज प्रकृति को बार-बार ये संकल्प दें कि ये सब मेरे अच्छे दोस्त हैं। ये बैठकर ही करना होगा और ये महसूस करें कि ये तीनों देव रूप में मेरे सामने हैं। उनको गुड वायब्रेशन भी दें और ये मेरे गुड फ्रेंड है ये पीलिंग भी दें।

प्रश्न : मुझे हरवक्त मौत का भय रहता है जो बचपन से ही समाया हुआ है कि कहीं मेरी मृत्यु ना हो जाये और वही चीज मुझे स्वप्न में भी आ जाती है। और यदा-कदा वो मुझे डराती रहती है। ये मेरे सबकॉन्शियस माइंड में जैसे समा गई है। मैं राजयोग का अभ्यास भी करता हूँ लेकिन इस चीज से मैं बाहर नहीं निकल पा रहा हूँ। और इसी कारण मैं हाई बीपी और शुगर का भी पैशन्ट हो गया हूँ। एलोपैथ मेडिसिन मैंने ली है लेकिन उसका भी प्रभाव अब तक पड़ता हुआ दिखाई नहीं दे रहा है। कैसे इस मौत के भय को मैं अपने अन्दर से निकालूँ, कृपया बतायें?

उत्तर : मौत के भय की कोई मेडिसिन नहीं होती। इसके लिए मेडिसिन है आत्म जागृति। और ऐसा प्रतीत होता है कि पिछले किसी जन्म में या इससे

पिछले 2-3 जन्मों में इसे मृत्यु ने बहुत कष्ट दिया है। वो भय सबकॉन्शियस माइंड में तब का भरा हुआ है। और वो इतना एक्टिव हो जाता है, किसी की भी मृत्यु देखता होगा ना, अब मृत्यु तो होती रहती है तो वो सब एक्टिव हो जाता है। ये बहुत अच्छी बात है कि आप राजयोग के पथ पर आ गये हैं इसलिए मैं कहूँगा कि ज़्यादा दिन नहीं बस 21 दिन एक अच्छी धुन लगा दें कि मैं आत्मा अजर, अमर, अविनाशी, बहुत पाँवरफुल हूँ, मेरी मृत्यु हो ही नहीं सकती। अपने इस स्वरूप को आप देखें। साथ में आपको अपने सबकॉन्शियस माइंड को क्लीन भी करना है। सुबह उठते ही जैसे आप योगयुक्त हों तो इस संकल्प को फिर से दोहराएं कि मृत्यु और कष्ट

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य



नहीं, देह रूपी वस्त्र उतारने का नाम है। मैं ये देह रूपी वस्त्र खुशी-खुशी से, अपनी स्व-इच्छा से उतार दूँगा। मैं तो आत्मा हूँ, अजर, अमर अविनाशी हूँ। जो आपके सबकॉन्शयस माइंड में छप गया है वो क्लीन होता रहेगा। साथ-साथ आप योगाभ्यास पर बहुत ध्यान दें। आपको ज्ञान में भी बहुत वृद्धि करनी चाहिए। हर रोज सेवाकेन्द्र पर जाना, परमात्मा के महावाक्य सुनना और वहाँ की सेवाओं में सहयोगी बनना, इससे वो चीज भूलती जायेगी और आपको लगेगा कि मृत्यु ऐसे कोई रोज-रोज नहीं आनी है। आई थी और जब आयेगी तब तक के अपने जीवन को मुझे एन्जॉय करना है। संकल्प कर लें, अपने से बात करें कि ये मृत्यु कुछ नहीं है, ये तो देह परिवर्तन का नाम है। मृत्यु को मैं एन्जॉय करूँगा ये तो नैचुरल चीज है। और सुबह उठते ही और सोने से पहले मैं निर्भय हूँ ये सात-सात बार अवश्य कर लें तो ये भय आपके सबकॉन्शयस माइंड से निकल जायेगा।

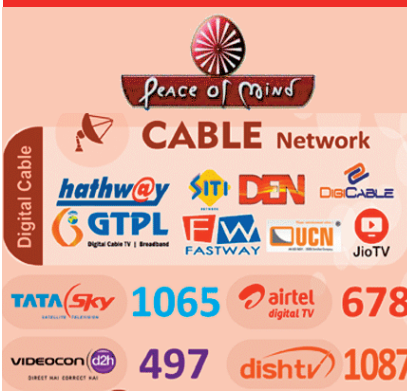
प्रश्न : मैं पिछले दो साल से ज्ञान में हूँ। और अच्छा योग करती थी। कुछ दिनों से मेरा योग नहीं लग

रहा है, और ना ही बाबा का ज्ञान अच्छा लग रहा है। मैं एक महान आत्मा हूँ 108 बार मैं लिखना भी चाहती हूँ, लिखती भी थी पर अब इसमें भी मेरी रूचि नहीं हो रही है। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ ये भी कई बार टटती हूँ लेकिन फिर भी अच्छी फीलिंग नहीं हो रही है। मैं खुद को देखकर बहुत ज़्यादा परेशान हो रही हूँ ऐसा मेरे साथ क्यों हो रहा है, मैं समझ नहीं पा रही हूँ। कृपया बताएं कि क्या करें?

उत्तर : कई बार मनुष्यों में सरटेन एज आने पर हार्मोन्स का परिवर्तन बहुत होता है। उससे ये देखा गया है युवकों की मनोस्थिति ऐसी बन जाती है बिल्कुल वो भाग जाना चाहते हैं। पढ़ाई में या किसी से उनको कहीं रूचि नहीं होती है। ज्ञान-योग जिसमें वो एक्सपर्ट थे वो फीका लगने लगता है, उससे भी वैराग आने लगता है। जीवन में सूखापन आने लगता है। ऐसे में उनके किसी साथी को उनकी मदद करनी चाहिए। देखिए ऐसे में मनुष्य खुद कुछ नहीं कर पाता है। जरूर ऐसे में अपने फ्रेंड होने चाहिए। जिससे ये बात हम शेरर भी कर सकें। और एक सुन्दर समाधान भी हमें मिल सके। पहला काम जो आपको करना है वो है पानी चार्ज करके पीना। सात बार संकल्प करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, या अपनी माँ से मदद लें या आपका कोई फ्रेंड हो उसकी मदद लें। और आप रोज अपने ब्रेन को भी एनर्जी दें। और लिखने की बात जो है वो आप 108 बार ना लिखें, 21 बार लिखें बस। धीरे-धीरे फिर उसमें रूचि जागृत हो जायेगी। और अगर हो सके तो होम्योपैथी डॉक्टर से भी बात कर लें।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'



श्रेष्ठ मानव जीवन का आधार- 'सहयोग'

सहयोग देना एवं सहयोग लेना जीवन चक्र का विधान है। इस विधान के अनुरूप आत्मा एवं प्रकृति दोनों के परस्पर सहयोग से संसार में जीवन चक्र चलता है। नीति शास्त्रों में भी कहा गया है -

जातस्य नदी तीरे तस्यपि, तृणस्य जन्म साफल्यम् यत् सलिल मज्जनाकुल, जन हस्तालंबनं भवति।

अर्थात् नदी किनारे जन्म लेने वाले तृण का जीवन सफल तब ही कहा जायेगा जब वह उस नदी प्रवाह में डूबने वाले व्याकुल मनुष्य के हाथ का सहारा बने क्योंकि डूबते हुए मनुष्य के लिए तिनके का सहारा ही जीवन बचाने का साधन बन जाता है।

इसी प्रकार वर्तमान समय विषय सागर में डूबे हुए मनुष्य को थोड़े से 'सहयोग' की आवश्यकता है। वह सहयोग न केवल उनके जीवन का कल्याण करेगा लेकिन इस दुःखी अशान्त संसार को परिवर्तन करने में भी मदद करेगा। मनुष्य का यह अमूल्य जीवन है ही दूसरों के सहयोग के लिए। दूसरों के कल्याण के लिए अपने संकल्प, बोल एवं कर्म का सहयोग देना ही सच्चा मानव धर्म है। एक दूसरे के सहयोग से मनुष्य शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक एवं सामाजिक आदि सर्व समस्याओं का समाधान कर अपने जीवन को निर्विघ्न बना सकता है। अगर मानव सहयोग के इस महत्व को जान जीवन में आध्यात्मिक ज्योति प्रज्वलित कर कर्म करें तो वह दुःख-अशान्ति, कलह-क्लेश वाली दुनिया को सदा के लिए सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम सम्पन्न, दैवी, सुखदाई संसार बना सकता है। जब-जब मानव धर्म-भ्रष्ट एवं कर्म-भ्रष्ट होकर मानवता की प्रगति में समस्या रूप बना है तब जिन आत्माओं ने अपने त्याग एवं बलिदान से समाज में आध्यात्मिक भावना, धार्मिक विचारधारा एवं नैतिकता के मूल्य बोध को सम्पूर्ण विलुप्त होने से बचाने में अपना सहयोग दिया, उन श्रेष्ठ धर्म-आत्माओं, महात्माओं को मानवता के इतिहास ने आज तक अपने विशाल दिल में अमरत्व का स्थान दिया है, उनसे विचारों में भिन्नता होते हुए भी सदा उनके सहयोग को याद कर अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करता है।

लेकिन मानव जीवन को सम्पूर्ण सुखी बनाने एवं दुःखी अशान्त संसार को सुखमय संसार बनाने में ईश्वरीय सत्ता का सहयोग अविस्मरणीय है। मानवता

को धर्म एवं कर्म की शिक्षा देने वाली सर्व-शास्त्र-शिरोमणि गीता इसका यादगार है। मन्दिरों में शिवलिंग, भक्ति में स्मरण होने वाला 'ओम नमः शिवाय' मंत्र, हमें उस सत्य कल्याणकारी ईश्वर पिता की याद दिलाता है जो जड़जड़ीभूत अवस्था को प्राप्त होने वाले सच्चे सनातन मानवधर्म को पुनः नई दिशा देकर सर्व आत्माओं को अपने 'स्वधर्म' में स्थित कराता है तथा नैतिक एवं आध्यात्मिक ज्योति को पुनर्जागृत करने के लिए आत्माओं में ज्ञान घृत डालता है। श्रेष्ठ जीवन बनाने के लिए ज्ञान एवं शक्ति सहयोग देने के साथ-साथ वह स्वयं

सहयोग देना एवं सहयोग लेना जीवन चक्र का विधान है। किसी भी प्रकार का सहयोग सार्थक तब होता है जब सहयोग देने वाले और सहयोग लेने वाले के साथ-साथ अन्य आत्माओं की भावनायें भी उसके प्रति शुभ हों। अतः विश्व-परिवर्तन तथा मानवता के कल्याण हेतु सदा अपनी शुभ भावना एवं शुभ कामनाओं के द्वारा सहयोगी बनो।

प्रत्यक्ष सेवाधारी बन सहयोग देकर सहयोग लेने की विधि सिखाता है। जिस विधि से यह पंकिल (कीचड़) समान दुनिया, पंकज (कमल) समान न्यारी, प्यारी, सुन्दर एवं सुखदायी स्वर्ग बन जाती है। समानता को सहयोग देने में मनुष्य की विशेषतायें एवं कलायें भी विशेष भूमिका निभाती हैं क्योंकि मनुष्य आदिकाल से कलाप्रिय रहा है। उस अनुरूप महान चित्रकार एवं विचित्र कलाकार परमात्मा ने भी हर मानव के अन्दर कोई न कोई विशेष गुण या विशेषतायें भर दी हैं। मनुष्य सृष्टि रूपी चैतन्य बगीचे में यह सब कलायें गीतकार, संगीतकार, चित्रकार, कवि, लेखक, साहित्यकार

आदि अनेक प्रकार के रूप, रंग और सुगन्ध से अपनी-अपनी शोभा बढ़ाते हैं। कला के प्रति अभिरूचि होने के कारण इस माध्यम से मिले हुए हर सन्देश या शिक्षा को मनुष्य-मात्र अपने जीवन के साथ तुलना करता रहता है। इसलिए इन सब कलाओं द्वारा मानव के मन में आध्यात्मिक चेतना जागृत करना ही कलाओं द्वारा सहयोगी बनना है जिससे जीवन सुखमय बन जाता और दूसरों में छिपी हुई कलाओं को विकसित करने में सहायक बन जाता है। इसलिए अपनी कलाओं को ईश्वरीय सेवा में समर्पित कर सार्थक बनाने के साथ दूसरों

की हो सकती है। इन सभी शक्तियों के सहयोग की हमें जीवन के हर क्षेत्र में जरूरत पड़ती है। अपने प्रति या दूसरों के प्रति कार्य में सहायक बनने वाली, इन शक्तियों को स्व तथा अन्य

के जीवन में श्रेष्ठता लाने के कार्य में लगाकर विश्व-परिवर्तन के कार्य में सहयोगी बनना अर्थात् शक्तियों में वृद्धि करना। "धन दिये धन ना खुटे" - ये ईश्वरीय विधान है। समय पर हम अगर अपनी इन शक्तियों से ईश्वरीय सेवा में सहयोगी बनते हैं तो आने वाले सुखमय संसार में हमें कंचन काया, निर्मल मन, अपार धन, प्रेम भर सम्बन्ध-सम्पर्क 21 जन्मों के लिए अधिकार के रूप में मिलता है। 'एक देना-लाख पाना'-इसीलिए तो गायन है। अतः अपनी सर्व शक्तियों सहित ईश्वरीय सेवा में सहयोगी बन श्रेष्ठ भाग्य को प्राप्त करो।

किसी भी प्रकार का सहयोग सार्थक तब होता है जब सहयोग देने वाले और सहयोग लेने वाले के साथ-साथ अन्य आत्माओं की भावनायें भी उसके प्रति शुभ हों। इसलिए शुभ भावना एवं शुभ कामना का सहयोग अनिवार्य है। अतः अन्य सर्व सहयोग के साथ-साथ सदा स्व प्रति तथा विश्व प्रति अपनी शुभ-भावना एवं शुभ-कामना का सहयोग देना ही मानवता को अपना महान सहयोग प्रदान करना है। स्थूल सहयोग न होने पर भी ये सहयोग कार्य करने वालों के प्रति वरदान या आशीर्वाद के रूप में सफलता दिलाता है। यह सूक्ष्म सहयोग वातावरण को शुद्ध बनाता है और दूसरों के मन में उमंग-उत्साह बढ़ाता है। समाज में एकता एवं संगठन में शक्ति भरने में शुभ भावना एवं कामना का सहयोग विशेष कार्य करता है, नहीं तो व्यक्ति विघ्न रूप बन जाता है। क्योंकि भावना अनुकूल संकल्प, और संकल्प प्रमाण कर्म होता है। अतः विश्व-परिवर्तन तथा मानवता के कल्याण हेतु सदा अपनी शुभ भावना एवं शुभ कामनाओं के द्वारा सहयोगी बनो। निःस्वार्थ भाव एवं निष्काम भावना ही शुभ-कामना एवं शुभ-भावना द्वारा सहयोगी बनने में मुख्य सहायक होती है।



- ब.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा



परिवर्तन का मात्र.... - पेज 10 का शेष साथ सर पे डाल लो तो ऊपर-ऊपर का थोड़ा-सा बाल भीग जायेगा बाकी सब सूखा ही रहेगा। वैसे ही परमात्मा ने थोड़ा-थोड़ा ज्ञान दिया ताकि हमें समझ आये और हम हल्के होते जायें। उन्होंने हमें आत्मा का ज्ञान दिया, ड्रामा का ज्ञान दिया, कर्मों का ज्ञान दिया, हल्का करने के लिए तो दिया तो ये सब जानकर हल्के हो जाओ। इसलिए हे आत्माओं! अब हल्के बनकर शांति की शक्ति फैलाओ। ये शांति आपकी शक्ति बन जाये।



चास बोकारो-झा.ख. । त्रिमूर्ति शिव जयंती कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए भोलू पासवान मेयर, डॉ. रतन केजरीवाल, ब.कु. कुसुम, ब.कु. सुमन तथा ब.कु. सुनीता।



आगरा-अवधपुरी । ब्रह्माकुमारीज युवा प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् ब.कु. गीता तथा ब.कु. बबिता को शिल्प देकर सम्मानित करते हुए सिम्बुजिया कॉलेज की प्रिन्सीपल डॉ. कविता सक्सेना। साथ है कॉलेज के डायरेक्टर गिरिराज सिंह राणा।



फरीदाबाद-से.21 डी । अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस एवं होली के कार्यक्रम में भाजपा जिला अध्यक्ष अनीता शर्मा तथा डॉ. एम.पी. सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. प्रीति तथा ब.कु. हरीश बहन।



हुसैनाबाद-झारखण्ड । होली मिलन समारोह के दौरान समूह चित्र में एस.डी.ओ. कुंदन कुमार व उनकी धर्मपत्नी पुष्पा लता, डी.एस.पी. विजय कुमार, ब.कु. पूनम तथा अन्य।



सुरतगढ़-राज. । ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर होली मिलन समारोह में नगरपालिका के नवनिर्मित सदस्यों का सम्मान करने के पश्चात् समूह चित्र में विधायक राम प्रताप कासनिया, पूर्व विधायक गंगाजल मील नगरपालिका अध्यक्ष ओम प्रकाश कालवा, उपाध्यक्ष सलीम, समाज सेवक रमेश अश्वानी एवं समस्त पार्षदगण, सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. रानी, ब.कु. साक्षी तथा अन्य।



जमशेदपुर-झारखंड । ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'गॉड ऑफ गॉड्स' मूवी का शुभारम्भ करते हुए ब.कु. अंजू, ऑनर ऑफ श्रीचैलर्स अशोक अग्रवाल, पूर्व बीजेपी लीडर सरयू राय तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति।



तोशाम-हरियाणा । अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम में डॉ. आशा, सी.एच.सी. को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. मंजू तथा कैरू सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. शोभा।

महिलायें अपने में छिपी अभूतपूर्व शक्ति को पहचानें



» एक श्रेष्ठ समाज का आधार महिलाओं का सम्मान—राजेन्द्र गायकवाड़ «

अम्बिकापुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा विश्व भवन चोपड़ा पारा में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में अम्बिकापुर की डी.एफ.ओ. प्रभाकर खलको ने कहा कि नारी शक्ति स्वरूपा है। एक नारी में वो सारी शक्तियाँ मौजूद हैं, चाहे वो माँ हो, पत्नी हो, शिक्षक हो, या फिर उच्च या निम्न ओहदे पर विराजमान हो लेकिन एक उगते हुए सूरज की भांति दूसरे को भी अपनी शक्तियों से सिंचित करती है। सरगुजा की डी.पी.ओ. ज्योति मिंज, महिला एवं बाल विकास अधिकारी ने कहा कि प्रत्येक नारी अपने भीतर के देवत्व को समाज हित, एवं राष्ट्र हित के कार्य में लगाये। सरगुजा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी ने कहा कि एक सशक्त समाज के लिए महिलाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण है। नारी अपनी आन्तरिक शक्तियों को जगाकर दुनिया के बड़े-बड़े कार्य कर सकती हैं। समाज सशक्त तब होगा जब हमारे अन्दर अध्यात्म शक्ति होगी और अध्यात्म शक्ति

से ही मानव जीवन में सन्तुष्टता और नैतिक मूल्य आते हैं जिससे ही राष्ट्र आगे बढ़ेगा। मातृ छाया की अध्यक्षा वन्दना दत्ता ने कहा कि नारी को हम देवी के रूप में देखें तो हर नारी इन ब्रह्माकुमारी बहनों जैसे समाज परिवर्तन से विश्व परिवर्तन की भूमिका निभा पायेगी। अम्बिकापुर के जेल अधीक्षक राजेन्द्र गायकवाड़ ने कहा कि महिलाओं में अभूतपूर्व शक्तियाँ होती हैं इसी कारण परमात्मा ने सृष्टि परिवर्तन के लिये स्थापित इस विद्यालय के संचालन के लिये भी महिलाओं को ही चुना। गायत्री परिवार से सुधा चौधरी ने कहा कि नारी के सशक्तिकरण से ही सारे समाज, सारे देश और खुद का विकास होगा।

कार्यक्रम में उपस्थित गायत्री परिवार, डॉ. मंजू शर्मा, डॉ. किरण अग्रवाल, स्त्री रोग विशेषज्ञ, सिक्ख समाज की अध्यक्षा, बीबी सुरजीत कौर, सिंधी समाज की अध्यक्षा, ज्योति पोपटानी अतिथियों ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

कोरोना महामारी से बचाव के लिए कोरोना योद्धाओं के प्रति अभिवादन

अहमदाबाद। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की अपील अनुसार ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र 'सुख शान्ति भवन' द्वारा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नेहा बहन के साथ-साथ सेवाकेन्द्र के सभी समर्पित ब्र.कु. भाई-बहनों ने दीपज्योत जगाकर शुद्धता, शान्ति, शक्ति, निश्चय, निर्भय, सुरक्षितता, आरोग्य, उत्साह और एकता का संकल्प लेकर सबका तन प्रसन्न एवं रोग प्रतिकारक शक्ति से भरपूर रहे, ऐसी शुभ भावना के संकल्प किए। कोरोना महामारी के सामने हमारी विजय निश्चित है, इस प्रकार संकल्प करते हुए कि सभी को व्यक्तिगत स्वास्थ्य आरोग्य प्राप्त हो। सबका जीवन शान्तिपूर्ण, आनन्दपूर्ण बना रहे। समग्र भारत और विश्व के लोगों की सुखकारी के लिए महाज्योति परमपिता शिव परमात्मा के शक्तिशाली सकारात्मक संकल्पों को 9:00 मिनट तक विशेष कॉमेंट्री के साथ मन्सा सेवा के द्वारा विश्व में संकल्पों के प्रकम्पनों को फैलाया।



गुजरात मीडिया की संयुक्त संयोजिका ब्र.कु. नंदिनी ने बताया कि गुजरात ज्ञान मुख्यालय, कांकरिया, अहमदाबाद स्थित 'सुख शान्ति भवन' सेवाकेन्द्र में कुल 51 दीपमाला प्रज्वलित की गई और सभी ने सम्पूर्ण मौन रखा, ताकि सभी को मौन द्वारा शक्ति मिले।

प्रशासन के नियमों के प्रति किया जागरूक



नागपुर-महा.। लॉकडाउन के दौरान क्वारंटाइन किए हुए भाई-बहनों के मनोबल को बढ़ाने हेतु विशेष रूप से प्रशासन द्वारा ब्रह्माकुमारीज की राजयोगिनी बहनों को आमंत्रित किया गया। ब्रह्माकुमारी बहनों ने मेडिटेशन का महत्व समझाया और उसे प्रतिदिन अपनाने को कहा। ताकि क्वारंटाइन के समय अपने मन को नियंत्रित कर समय को सफल कर सकें। और प्रशासन द्वारा बताए गए नियमों का पालन करने हेतु भी जागरूक किया।

नारी सृष्टि कर्ता का विशेष उपहार



कोरबा-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर बहन रूकमणी नायर, वरिष्ठ समाज सेविका ने कहा कि मेरा तो यह मानना है कि एक दिन नहीं, हर दिन ही नारियों के लिये विशेष दिवस होता है। पचास कन्याओं का एक बालिका गृह है, जिसकी देखरेख मैं करती हूँ। इस बात का मुझे गर्व है कि मैं अपने प्रयास से उन्हें सुसंस्कारित कर पाऊँ। रश्मि शर्मा, महासचिव, अखण्ड ब्राह्मण समाज, छ.ग. ने कहा कि माँ के बिना सुसंस्कारित परिवार व श्रेष्ठ समाज की कल्पना करना ही असम्भव है। ब्र.कु. बिन्दु ने कहा विश्व परिवर्तन में नारी शक्ति की एक अहम भूमिका है। उसके द्वारा ही परमात्मा विश्व परिवर्तन का कार्य करा रहा है। डॉ. के.सी. देबनाथ ने कहा कि राष्ट्र कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने साहित्य में वर्णन किया है कि नारी सृष्टि कर्ता का विशेष उपहार है। सृष्टि की सारी संवेदना उनमें समाई हुई है। अनीष शर्मा ने कहा कि कोरबा में नारी शक्ति ऊर्जावान और सशक्त है, लेकिन युवाओं को विशेष सशक्त बनाने की आवश्यकता है। ब्र.कु. रूकमणी दीदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान में विशेष स्वयं परमपिता शिव परमात्मा ने विश्व परिवर्तन का कार्य करने हेतु नारी शक्ति के सिर पर ही ज्ञान कलश रखा और उन्हें सम्मान दिया। तब से ही आध्यात्मिक क्षेत्र में महिलायें आगे आईं और आज विश्व में शान्ति और शक्ति का ध्वज लहरा रही हैं। अनुभा सिंह, सहायक अभियंता सी.एस.पी.जी.सी.एल ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

शान्तिवन तथा उसके आस-पास में किया छिड़काव



सैनटाइज़ करके कोरोना से बचाव के लिए किया प्रेरित

शान्तिवन। कोरोना महामारी से बचाव के लिए ब्रह्माकुमारीज संस्थान ने शान्तिवन तथा उसके आस-पास तलहटी तिराहे, आस-पास की दुकानों तथा सी.आई.टी. कॉलेज तक सैनटाइज़र का छिड़काव किया। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के सफाई विभाग के ब्र.कु. जगदीश ने अपनी टीम के साथ दो टैंकर से छिड़काव किया।

इसके साथ ही परिसर में आने-जाने वाले वाहनों को भी सैनटाइज़ किया जा रहा है। मनमोहिनीवन तथा आनन्द सरोवर के साथ श्रमिकों के रहने वाले स्थानों को भी सैनटाइज़ किया जा रहा है। शान्तिवन से पुलिस थाने के बीच की दुकानों को भी छिड़काव कर सैनटाइज़ किया जा रहा है।

ब्रह्माकुमारीज द्वारा कोरोना योद्धाओं को किया सम्मानित



सादाबाद-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा कोरोना योद्धाओं प्रशासनिक अधिकारी, पुलिस, नगरपंचायत कर्मचारियों, पत्रकार बंधुओं को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उपजिलाधिकारी राकेश कुमार, सादाबाद नायब साहब संतोष कुमार, नगरपंचायत अध्यक्ष रविकांत अग्रवाल, उ.प्र. उद्योग व्यापार मंडल महामंत्री, ब्र.कु. वर्मा जी, कोतवाली कार्यालय पर पुलिस अधीक्षक योगेश कुमार उपस्थित रहे।

ब्रह्माकुमारीज ने जिला प्रशासन को खाद्य सामग्री का सहयोग प्रदान किया

रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र शांति सरोवर द्वारा लॉकडाउन के दौरान गरीब और जरूरतमंद लोगों के लिए कलेक्टर एस.भारती दासन को 29 क्विंटल चावल, 3 क्विंटल गेहूं, 2 क्विंटल पोहा, 50 किलो दाल और 50 किलो शक्कर



खाद्य सामग्री की गाड़ी को क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला दीदी ने शिवध्वजारोहण दिखाकर स्वाना किया। इस अवसर पर ब्र.कु. किरण, ब्र.कु. वनिशा भी मौजूद रहीं।

ब्रह्माकुमारीज के द्वारा किया खाद्य सामग्री का वितरण



वाराणसी-उ.प्र.। देश में चल रहे कोरोना संकट के मद्देनजर ब्रह्माकुमारीज द्वारा जरूरतमंद लोगों को भोजन पहुँचाने का क्रम निरंतर जारी है। देश में आयी आपदा के समय जन सेवा में मुस्तैदी से खड़े पुलिस प्रशासन के माध्यम से ब्रह्माकुमारीज संस्था देश के विभिन्न स्थानों में मानवीय सेवाओं में संलग्न है। बनारस में भी लॉक डाउन के शुरुआत से ही जनसेवा में तत्पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा पिछले तीन चार दिनों से पुनः भूख लोगों तक भोजन पहुँचाने हेतु बनारस के शासन-प्रशासन के कर्मठ जवानों के साथ सहयोग प्रदान किया जा रहा है। संस्था के ग्राम लमही में भी भोजन के पैकेट वितरित किए। संस्था के क्षेत्रीय कार्यालय की निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुरेन्द्र दीदी, प्रबन्धक ब्र.कु. दीपेन्द्र के निर्देशन में ये सेवायें जारी हैं।

जरूरतमंदों को वितरित किया जा रहा है भोजन

पानीपत-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज के ज्ञान मानसरोवर व पानीपत सर्कल के सेवाकेन्द्रों की ओर से लॉकडाउन के दौरान उस क्षेत्र के आस-पास 1000 गरीब व जरूरतमंदों को भोजन वितरण किया जा रहा है। और साथ-साथ लॉकडाउन के सोशल डिस्टेंस मॉडेल करने के नियमों का पालन करने हेतु भी जागृत किया जा रहा है। ये जानकारी ज्ञान मानसरोवर के निर्देशक ब्र.कु. भारत भूषण ने दी। इसके अतिरिक्त ब्रह्माकुमारीज संस्थान की ओर से तन, मन, धन से भी सहयोग प्रदान किया जा रहा है।



राजकोट-महाराष्ट्र(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा लॉकडाउन के दौरान जरूरतमंद लोगों को फूड पैकेट वितरित करते हुए ब्र.कु. सुप्रिया व ब्र.कु. चेतना।